श्री अमर भारती

वीरायतन की मासिक पत्रिका | अप्रैल-मई- 2023 | वर्ष-66 | अंक-04-05 | मूल्य: रू॰ 10/-

Congratulation

मानवजाति के कल्याण के लिए स्त्री शक्ति का उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है जितना पुरुषवर्ग का।

श्री अमर भारती

वीरायतन की मासिक पत्रिका अप्रैल-2023 वर्ष: 66 अंक: 04

संस्थापक
उपाध्यायश्री अमरमुनि

दिशा-निर्देश
आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी

सम्पादक
साध्वीश्री साधनाजी

महामंत्री
नवीन चंद सुचंती

उद्बोधन

जय-जय सन्मति वर्धमान जिन,
जय-जय वीर, अजय महावीर।
विश्व ज्योति जय करुणा सागर,
जय-जय अविचल सुरगिरि धीर!

तू सन्मति, तू बोध विधाता,
तू ही सच्चा है जगत्राता।
जन्म-जन्म के अन्धजनों का,
तू ही दिव्य दृष्टि का दाता।।

तू भक्तों के मन मन्दिर में,
सदा विराजित है स्वामी।
वीर जिनेश्वर! तेरे पथ का,
सदा रहे जग अनुगामी।।

–उपाध्याय अमरमुनि

This issue of Shri Amar Bharti can be downloaded from our website- www.veerayatan.org

अनुक्रमणिका

उद्बोधन	उपाध्याय अमरमुनि	01
ज्योति पुरुष महावीर	उपाध्याय अमरमुनि	03
सत्य की खोज	आचार्य चन्दना	09
ध्यान साधना	उपाध्याय अमरमुनि	10
वर्धमान महावीर	उपाध्याय अमरमुनि	16
साधना की लोकोन्मुखी.....	श्री रंजन सूरि देव	17
कानून और नैतिकता	उपाध्याय अमरमुनि	21
ताई मां! कितनी दूर देखकर....	डॉ. अभय फिरोदिया	23
समाचार		29
स्मृतिपुष्प		47

सत्य है अनन्त आकाश

ऊँचे आकाश में उड़ता है पक्षी। उसकी उड़ान में कितनी स्वतन्त्रता है, कितनी मुक्ति है। एक है पिंजरे में बन्द पक्षी और एक है मुक्त आकाश में मुक्त उड़ान। क्या ये दोनों हमारे चित्त की दो स्थितियों के प्रतीक नहीं है?

आकाश में उड़ता पक्षी न पीछे कोई पदचिह्न छोड़ता है न उड़ान का कोई मार्ग ही उसके पीछे बनता है।

सत्य का भी ऐसा ही आकाश है। जो मुक्त होते हैं वे उसमें उड़ान भरते हैं, पर उनके पीछे कोई पदचिह्न नहीं बनते और न कोई मार्ग निर्मित होते हैं। अत: स्मरण रहे सत्य के लिए बंधे-बंधाएं मार्गों की तलाश व्यर्थ है।

– साध्वी शुभम्

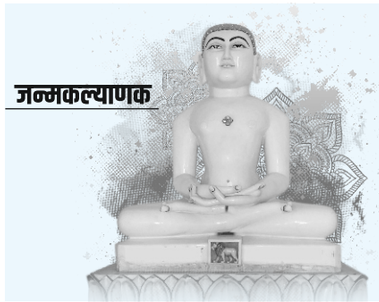

ज्योति पुरुष महावीर

भारतीय काल गणना में चैत्र मास का अपना एक वैशिष्ट्य है। चैत्र को मधुमास कहा जाता है अर्थात् माधुर्य का मास। वह कुसुमाकर है, महकते फूलों का खजाना।

चैत्र की विभूतियाँ

चैत्र अष्टमी को आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्मकल्याणक है और इसी माह की नवमी मर्यादा पुरूषोत्तम राम के जन्म से गौरवान्वित है और पूर्णिमा महाबली हनुमान के जन्म से संबन्धित है। इसी माह के शुक्लपक्ष के प्रथम दिन से शक्ति पूजा और अन्तिम नौ दिन जैन परम्परा के हजारों हजार भक्त तपस्वी आयंबिल तप की उत्कृष्ट तपश्चर्या की साधना करते हैं।

भारतीय ज्योतिष यों तो प्रत्येक त्रयोदशी को सर्वसिद्धा कहते हैं परन्तु चैत्र की सर्वशुक्ला त्रयोदशी तो वस्तुत: सर्वसिद्धा है। इस त्रयोदशी की शुभ ज्योत्स्ना की अर्धरात्री में एक दिव्य घटना घटित हुई थी, जिसने विश्व इतिहास में ऐसी गरिमा और महिमा प्राप्त की जो आज भी हजारों लाखों नर-नारियों द्वारा स्मरणीय है।

महावीर का जन्म

ईसापूर्व 599 का वर्ष विश्व इतिहास में एक आलोक वर्ष कहा जाता है। जंबुद्वीप [एशिया खण्ड] के उपमहाद्वीप भारत के पूर्वांचल में चैत्रशुक्ल 13 के दिन एक ज्योतिपुरूष ने जन्म लिया था। जिसके दिव्य प्रभामण्डल से मानव जाति के भाग्य क्षितिज पर एक अपूर्व आलोक फैल गया। मानवता उल्लास से पुलक उठी और गगनमण्डल एक अलौकिक चमक से चमक उठा। विश्वभर की धरा स्नेह सुरभी से महक उठी। मानवता का अमर प्रकाश महामानव के पावन स्पर्श से विश्व का वायुमण्डल सुरभित हो उठा। कहते हैं उस दिन धरती और स्वर्ग एक हो गया था। स्वर्ग के देव विराट आत्मा की वन्दना करने धरती पर उतर आये थे। मालुम है वे कौन थे? भारत के इतिहास ने उन्हें तीर्थंकर महावीर के नाम से जाना है। वे पहले वर्धमान के रूप में थे, बाद में भगवान बन गये। वर्धमान ही महावीर बन सकते हैं। जो सतत् वर्धमान रहता है,

गतिशील रहता है, जो नित्य निरन्तर आगे की ओर बढ़ता है वही महावीर बनता है। महाकाल के इतने दूर के किनारे ऊपर भी आज श्रद्धा और भावना से स्पन्दित लाखों-करोंड़ों मनुष्यों के हृदय उन्हें तीर्थंकर महावीर के नाम से वन्दन करते हैं।

महावीर गणतन्त्र के राजकुमार

गणतन्त्रों के इतिहास में वैशाली के गणतन्त्र का प्रमुख स्थान है। वह मल्ल, लिच्छवी, वज्जी और ज्ञातृ आदि आठ गणतन्त्रों का एक संयुक्त गणतन्त्र था। उस गणतन्त्र की राजधानी थी वैशाली, जिसके सम्बन्ध में तथागत बुद्ध ने कहा था कि स्वर्ग के देवों को देखना हो तो वैशाली के पुरूषों को देखो और देविओं को देखना हो तो वैशाली की महिलाओं को देखो। इसका अर्थ है कि वैशाली उस युग में स्वर्ग से स्पर्धा कर रही थी। इसी वैशाली के उपनगर क्षत्रियकुल में ज्ञातृशाखा के गणराजा सिद्धार्थ के यहाँ वर्धमान महावीर का जन्म हुआ। उनकी माता थी विदेह की राजकुमारी राणी त्रिशला। त्रिशला वैशाली गणराज्य के महामात्य राष्ट्राधीश चेटक की छोटी बहन थी। दिगम्बर जैन पुराण उन्हें चेटक की पुत्री कहते हैं। भारत का पूर्वखण्ड उन दिनों शासनतन्त्र की प्रयोगभूमि बना हुआ था। एक ओर मल्ल, लिच्छवी और शाक्य आदि गणतन्त्र फल-फूल रहे थे और दूसरी ओर मगध, वत्स आदि राजतन्त्र भी यशस्विता के शिखर पर पहुँच रहे थे। महावीर का सम्बन्ध दोनों तन्त्रों से था। महावीर मूल में गणतन्त्र के राजकुमार थे परन्तु उनका पारिवारिक सम्बन्ध भारत के उस समय के अनेक एकतन्त्री उच्च राजवंशियों के साथ भी था। मगध सम्राट श्रेणिक, अवन्तिपति चन्द्रप्रद्योत, कौशाम्बी नरेश शतानिक और सिन्धु सौविर देश के राजा उदाई (उदायन) जैसे एकतन्त्री नरेश उनके निकट के सम्बन्धों में से थे।

साधना के पंथ पर

महावीर को वह सब प्राप्त था जो एक राजकुमार को प्राप्त होता है। यद्यपि वे गणतन्त्र के राजकुमार थे, पुराणों में प्राचीन गणतन्त्रों के प्रमुखों की श्रीसमृद्धि का वर्णन भी राजतन्त्रों की तरह ही मिलता है। अत: महावीर वैभव, विलास, सुख-साधनों की दृष्टि से एकतन्त्र राजकुमारों से किचिन्मात्र न्यून नहीं थे। लेकिन महावीर का जागृत मन वैभव की मोहक लीला में अधिक न रम सका। यौवन के आल्हादक

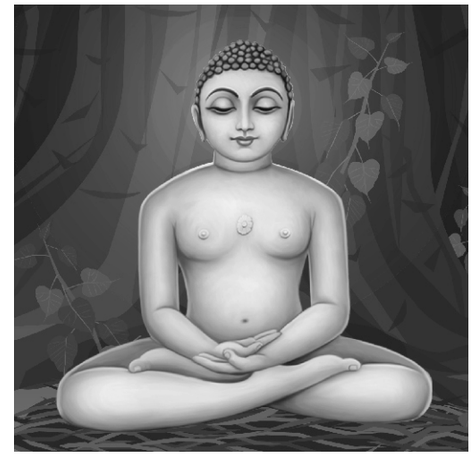

मधुर क्षणों में ही त्यागी बन गये। तीस वर्ष के यौवनकाल में जब कि मनुष्य की आंखें कम ही खुलती है तब महावीर ने आंखें खोली। उनके अन्दर की ज्ञानचेतना जगी और वे चल पड़े अकेले ही निर्जन शून्य वनों की ओर, साधना के कठिन पथ पर। प्रजा और परिवार का निर्मल प्रेम अपार मान सम्मान, भोगविलास के विशाल सुखसाधन और राज्यश्री का मोहक रूप महावीर को यह सब सहज प्राप्त था, परन्तु महावीर जलकमलवत् निर्लिप्त और निस्पृह थे। मार्गशीर्ष दशमी के दिन समग्र सांसारिक सम्बन्धों से मुक्त होकर सर्वथा अकिंचन श्रमण हो गये।

वे श्रमण जीवन की एकान्त आत्मसाधना में लीन हो गये। जहाँ चारों ओर मौत नाच रही हो वहाँ हिंसक प्राणियों से व्याप्त शून्य वनों में, पर्वतों की गहरी अंधेरी गुफाओं में, नदियों के तट पर प्रभु महावीर ध्यानस्थ खड़े रहते। तन मन दोनों से मौन अचल अकेले अद्वितीय। महावीर का संयम बाहर से आरोपित नहीं था। वे अन्दर से जागृत थे। इसलिए प्राणान्तक कष्टों का भयंकर खतरा भी उन्हें अपने पथ से विचलित न कर सका। अनुकूल और प्रतिकूल दोनों स्थितियों में वे निष्प्रकम्प दीपशिखा की तरह आत्मलीन रहे। सब ओर से विस्मृत एकमात्र सत्य जिसे प्राप्त करने के बाद दूसरा कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रहता। वह सत्य श्रुतसत्य नहीं था या कभी गुरू से या किसी ग्रन्थ से प्राप्त नहीं होता उस सत्य की खोज, उस सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति के लिए दीर्घ सुदीर्घ काल तक [साड़े बारह वर्ष तक] तप:साधना में लीन रहे। इस प्रत्यक्ष सत्य को स्वयं की अनुभूति द्वारा अन्दर की जागृति से पाया जाता है। जिसे दर्शन की भाषा में केवलज्ञान, सत्य का निराबाध बोध कहा जाता है उसे प्राप्त किया।

लोकमंगल के लिए धर्मदेशना

केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद प्रभु महावीर उनका साक्षात्कृत सत्य बोध जन-जन को देने के लिए एकान्त निर्जन वनों से जनता के बीच आये। स्वयं कृतकृत्य होकर लोकमंगल हेतु महावीर ने धर्म देशना की। जो कुछ प्राप्त करना था वह प्राप्त हो गया था। वैयक्तिक प्राप्ति या सिद्धि जैसा कुछ भी शेष नहीं था। तब धर्मदेशना का क्या उद्देश्य था? गणधर सुधर्मा के शिष्य आर्यजम्बु ने प्रभु

महावीर की धर्म देशना का हेतु बताया है– "सव्व जग जीव रक्खण दयठ्ठयाए भगवया पावयणं सुकहियं।" इससे फलित होता है कि महावीर एकान्त निवृत्तिवादी नहीं किन्तु प्रवृत्तिवादी भी थे। उनकी जीवन धारा निवृत्ति और प्रवृत्ति के दोनों तटों के बीच से बहती थी। महावीर की प्रवृत्ति जनजागरण, जनमंगल की थी। अंधकार में भटकती मानवजाति को शुद्ध सत्य की ज्योति के दर्शन कराना ही प्रवचन का उद्देश्य था।

महावीर का धर्म

महावीर शरीर नहीं आत्मा है। अत: उनका धर्म भी शरीराश्रित नहीं, आत्माश्रित है। अनेक विकारों की पर्तों के नीचे दबे अपने शुद्ध और परम चैतन्य की शोध ही महावीर की धर्म साधना है। महावीर का धर्म जीवन विकास की एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। अत: वह एक शुद्धधर्म है। धर्म एक ही होता है अनेक नहीं। अनेकत्व क्रियाकाण्ड पर आधारित होता है। जबकि क्रियाकाण्ड देश, काल और व्यक्ति की बदलती परिस्थिति से सम्बन्ध रखते हैं। फलत: वे अशाश्वत होते हैं जबकि धर्म एक शाश्वत सत्य है।

धर्म और क्रियाकाण्ड की भिन्नता को समझने के लिए जैनदर्शन के निश्चय और व्यवहार नय को समझना होगा। निश्चय आन्तरिक चेतनाश्रित एक शुद्धभाव है। अत: वह सदा सर्वदा एक ही होता है। व्यवहार देहाश्रित होता है, बाह्याश्रित होता है। अत: वह कभी भी एक नहीं हो सकता। इसलिए महावीर शुद्ध और शुभ की बात करते हैं। शुद्ध में भवबन्धन से मुक्ति है और शुभ में बन्धन से मुक्ति नहीं किन्तु बन्धन में परिवर्तन है। अशुभ में से शुभ में बदलना। इस प्रकार महावीर कुछ सीमा तक क्रियाकाण्ड रूप शुभ की स्थापना करते हैं और वहाँ से ऊपर उठने की बात कहते हैं। महावीर न स्थविरकल्पी है न जिनकल्पी। वे जैन दर्शन की भाषा में कल्पातीत है। अर्थात् साम्प्रदायिक पंथों के सारे क्रियाकाण्डों से मुक्त सहज शुद्ध स्वभाव में स्थित।

महावीर का पुरूषार्थवाद

महावीर ने मानवजाति को पुरूषार्थ प्रधान कर्मदृष्टि दी है। उनका कर्मवाद भाग्यवाद नहीं किन्तु भाग्य का निर्माता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य ईश्वर के हाथ की कठपुतली नहीं है कि वह जैसा चाहे मनुष्य को नचाये। वह अपने भाग्य का स्वयं स्वतन्त्र विधाता है। उसका अच्छा या बुरा निर्माण उसके अपने हाथ में है। महावीर का कर्म सिद्धान्त मनुष्य को अंधकार में से प्रकाश में लाता है, कदाचार में से सदाचार में लाता है और सतत् गतिशील होने की प्रेरणा देता है।

महावीर का सत्य, अनन्त है

महावीर कहते हैं– 'सत्य अनन्त है।' वह कोई एक व्यक्ति, जाति, राष्ट्र, पंथ या

सम्प्रदाय विशेष में आवद्ध नहीं है। जो अनन्त है उसे शब्दों की क्षुद्र परिधि में कैसे समावेश किया जा सकता है? आकाश अनन्त है। वह घटाकाश के रूप में प्रतिभाषित व प्रचारित होने पर भी आकाश घट में सीमित नहीं है। यही बात सत्य के सम्बन्ध में भी है। वह तत्त्वदर्शी महापुरूषों की चेतना में झलकता तो पूर्ण है परन्तु वाणी में उसका कुछ अंश ही आ सकता है। सम्पूर्ण रूप से सत्य किसी एक व्यक्ति के द्वारा कभी व्यक्त नहीं हो सकता। जब भी प्रकट होगा, अंशत: ही प्रकट होगा। महावीर के अनेकान्त का बीज इस तत्त्वदृष्टि में है। महावीर का तत्त्वदर्शन समन्वय का तत्त्वदर्शन है। जो विभिन्न विचारों को एक धारा का रूप देता है।

महावीर की अहिंसा मैत्री है

महावीर ने अहिंसा की परिधि को खूब विस्तार दिया। उनकी अहिंसा अमुक प्राणीविशेष तक नहीं किन्तु प्राणीमात्र के प्रति प्रवाहित हुई। महावीर की अहिंसा ने समाज, राष्ट्र, धर्म, पंथ और व्यक्ति के अपने-पराये सभी भेदों को तोड़ा, सर्वत्र समदर्शन का अद्वैती शंख बज उठा। तू और मैं एक, तेरा और मेरा सब एक। यह है महावीर की अहिंसा का मार्ग।

महावीर की दृष्टि में किसी प्राणी की हत्या ही केवल हिंसा नहीं है किन्तु उन्होंने प्रत्येक शोषण, उत्पीड़न एकान्त आग्रह को भी हिंसा कहा है। केवल तन की हिंसा ही हिंसा नहीं बल्कि तन की हिंसा से भी मन की हिंसा भयंकर होती है।

महावीर की अहिंसा केवल करूणा पर आधारित नहीं है। महावीर अहिंसा का साक्षात्कार मैत्री में करते हैं। उनकी दृष्टि में मैत्री ही शुद्ध अहिंसा है। करूणा की अहिंसा कभी सामनेवाले को बिचारा बना देती है– जैसे **"अरे बिचारा मर रहा है उसे बचाना चाहिए।"** करूणा में रक्षा पानेवाला नीचे और रक्षा करनेवाला ऊपर होता है। परन्तु मैत्री में सब एक धरातल पर होते हैं। कोई ऊँचा-नीचा नहीं होता बल्कि सब बराबर होते हैं। इसलिए महावीर ने कहा **"विश्व के प्राणियों के साथ किसी भी प्रकार के पक्ष-विपक्ष रहित मैत्री करो।" "मेत्तिं भूएसु कप्पए"** आज विश्वमानव को मैत्रीपूर्ण अहिंसा की जरूरत है।

महावीर की ऐतिहासिक उपलब्धि

भगवान महावीर की सामाजिक सन्दर्भ में जो एक ऐतिहासिक और सर्वोत्तम उपलब्धि है वह है मानव को मानव के रूप में प्रतिष्ठित करने की दृष्टि। महावीर के दर्शन में मानव ही महान है। मानव देवपूजक नहीं किन्तु देव ही मानव पूजक है। **"देवावि तं नमंसन्ति जस्स धम्मे सया मणो"** जिनका अन्तर्मन धर्म में रमा हुआ है उनके चरणों में देव भी नतमस्तक हो जाते हैं। देवों की दासता से मुक्त करनेवाले वे ही महामानव है जिन्हें भारत के प्राचीन मनीषियों ने देवाधिदेव कहा है। देवाधिदेव का

अर्थ है देवों के भी देव।

जब मनुष्य बाहर की मान्यताओं के आवरणों में दब गया था, पशुओं को तो एक खूंटें से बांधा जाता है परन्तु मानव तो हजार-हजार खूंटों से बंधा हुआ था, तब महावीर ने धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण, वर्ग, लिंग, समाज और राष्ट्र आदि कृतिम कल्पित आवरणों को एवं बन्धनों को तोड़कर मानव को मानव की स्वतन्त्र शुद्ध महत्ता में स्थापित किया।

महावीर ने स्त्री और पुरूष, आर्य और अनार्य, ब्राह्मण और क्षुद्र आदि कृत्रिम भेद रेखाओं को हटाकर धर्म को प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ बनाया। सारे भेदभाव मिटाकर धर्म को सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय तथा सर्वजन समाचरणाय प्रस्तुत किया। मानवता के इतिहास में महाश्रमण महावीर की ऐसी अपूर्व उपलब्धि है कि जिसे आज की भाषा में नयी विचार क्रान्ति कहा जा सकता है।

महावीर का शाश्वत संदेश

महावीर का दिव्य संदेश किसी सम्प्रदाय या जाति विशेष के लिए नहीं किन्तु समग्र मानवजाति के लिए है। उनका दिव्य बोध किसी समय विशिष्ट के लिए सामयिक नहीं किन्तु शाश्वत है। जिसे देश और काल की क्षुद्र सीमा बांध नहीं सकती। महावीर समग्र मानवता के लिए एक दिव्यातिदिव्य प्रकाश स्तम्भ है। उनके सिद्धान्तों और आदर्शों के निर्मल प्रकाश में हर कोई व्यक्ति हर किसी देश और काल में आत्मबोध का संदेश प्राप्त करता रहेगा। और जीवन के परम लक्ष्य की ओर आनन्द के साथ अग्रसर होता रहेगा।

जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति।
तं देव देव महियं सिरसा वन्दे महावीरम्॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित! बुद्धि बोधात्,
त्वं शंकरोसि भुवनत्रय - शंकरत्त्वात्।
धातासि धीर! शिवमार्ग - विधे विंधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोसि॥

देवताओं के द्वारा पूजित हे प्रभो! आप में ज्ञान का पूर्ण प्रकाश हुआ है इसलिए आप बुद्ध हो। तीन लोक के प्राणियों को सुख-शान्ति प्रदान करनेवाले हो अत: आप शंकर हो। हे धीर! आप रत्नत्रय रुप मोक्ष-मार्ग की विधि के विधाता हो, उपदेष्टा हो इसलिए आप विधाता हो, ब्रह्मा हो। हे भगवन्! आप संसार के सब पुरुषों में उत्तम होने के कारण वस्तुत: पुरुषोत्तम हो, विष्णु भी आप ही हो।

- आचार्य चन्दना

जाना चाहता हूँ सत्य की खोज में नन्दिवर्धन।
पर कहाँ वर्धमान?
वन में! एकान्त में! अज्ञात में!
सत्य स्वयं में है
'स्व' ही सत्य है।
उसकी खोज बाहर में वर्धमान?
बुद्ध पुत्रों का मार्ग यही है।
पर क्यों?
राजभवन और सिंहासन
परिवार और प्रजा का प्रेम
सत्य की खोज में बाधक कैसे?
'मेरे' के जाल में अवरुद्ध मैं
'मैं' को पहचानने में असमर्थ है।
सुखद छाया से मुक्त होकर
निपट अकेला....
मैं स्वयं को देख सकुँगा।
वन में भी संसार है। राजकुमार!
अन्तर है।
बाहर नहीं।
भीतर अन्तर है।

नमस्तुभ्यम् नमस्तुभ्यम्, नमस्तुभ्यम् नमो नमः।
नमोमह्यम् नमोमह्यम्, नमोमह्यम् नमो नमः॥

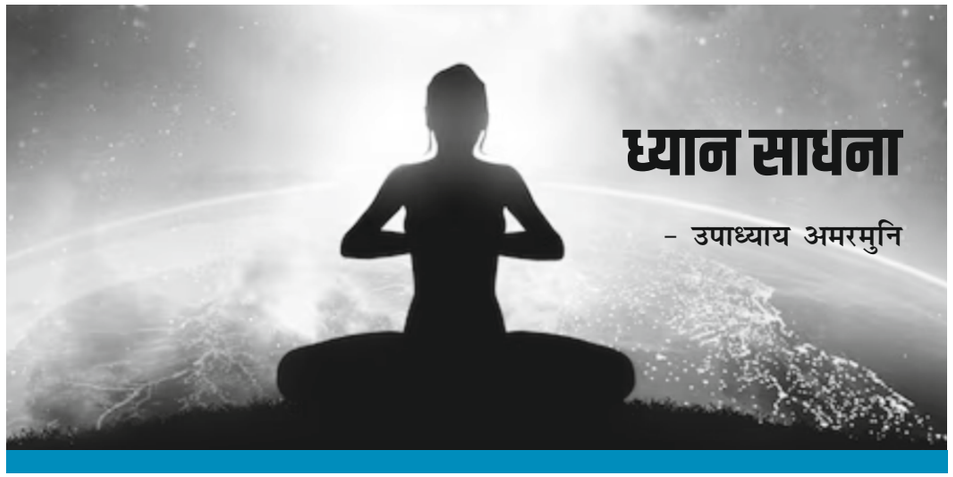

प्रश्न है सामायिक में चित्त स्थिर नहीं रहता तो सामायिक कैसे करें?

प्रश्न उचित है कि स्थिरता (एकाग्रता) के बिना सामायिक का वांछित फल, आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। सामायिक कोई जादू तो नहीं कि 'करेमि भन्ते' का मन्त्र बोला और मन वश में हो गया। मन को वश में करने के लिए साधना करनी होती है। अत: सामायिक में वह प्रयत्न करना चाहिए जिससे मन एकाग्र हो, समत्त्व में स्थिर हो।

समभाव और ध्यान

सामायिक का मूल अर्थ 'समता भाव' है, समत्वयोग की साधना है। और समत्वयोग ही ध्यान साधना का मुख्य आधार है। जब मन समत्व में स्थिर होगा तभी वह ध्यान योग का आनन्द प्राप्त कर सकेगा। आचार्य हेमचन्द्र ने कहा है–

न साम्येन विना ध्यानं, ध्यानेन विना च न तत्
निष्कम्पं जायते तस्मात् द्वयमन्योन्य कारणम्॥

योगशास्त्र 4/114

समभाव का अभ्यास किये बिना ध्यान नहीं होता, और ध्यान के बिना निश्चल समत्व की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए समभाव और ध्यान का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे के पूरक भी है और घटक भी।

मनोनिग्रह कैसे हो?

प्राचीन ग्रन्थों में समभाव की साधना के लिए अनेक उपाय बताये हैं। उन सब में ध्यान साधना प्रमुख है। अत: प्रस्तुत में सामायिक में ध्यान कैसे किया जाय? मनोनिग्रह कैसे हो? इन प्रश्नों का समाधान दिया जा रहा है।

मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जागृत अवस्था में हमें जो विविध वस्तुओं का बोध होता है, उनमें से कुछ चेतना के अधिक निकट

होती है, कुछ आस-पास होती है और कुछ किनारे घुमती रहती है। जिस पर चेतना का प्रकाश केन्द्रित हो जाता है वह ध्यान का विषय बन जाती है। अत: किसी भी वस्तु या विषय पर चेतना के प्रकाश का केन्द्रित हो जाना, ध्यान कहा जाता है। इस प्रकार ध्यान का अर्थ हुआ– वस्तु (ध्येय) पर चेतना के प्रकाश का केन्द्रित होना। जैनदृष्टि से इसे ही **"एक पुद्गल निविष्ट दृष्टि"** कहा जाता है। सीधी भाषा में मन का एक विषय पर स्थिर हो जाना, एकाग्र हो जाना ध्यान है।

कुछ विद्वान कहते हैं– 'योगश्चित्तवृत्ति निरोध:' अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाना, ध्यानयोग है। इसका अर्थ है– मन को गतिहीन कर देना, शून्य बना देना। योगदर्शन ने यह व्याख्या की है। कुछ विद्वान साधक भी ध्यान के लिए मन को गतिहीन करना, शून्य करना, तथा मन को भीतर में ले जाना आदि शब्दावली का प्रयोग करते हैं।

मेरा अनुभव है कि साधना की प्रथम अवस्था में इस प्रकार की शब्दावली मात्र एक उलझन है। साधना की प्रथम सीढ़ी पर चरण रखनेवाला साधक पहले ही क्षण में उसके शिखर को स्पर्श करने के लिए हाथ बढाए तो यह साधना की गति तथा प्रगति का सही मार्ग नहीं होगा।

जैन साधना पद्धति सर्वप्रथम मन को गतिशून्य करने की अपेक्षा उसे बदलने पर बल देती है। उपाध्याय यशोविजय कृत योगदर्शन की टीका में वे कहते हैं– **"योग: दुश्चित्तवृत्ति निरोध:।"**

मन जबतक मन रूप में है, गतिशील रहता है, सर्वथा शून्य नहीं हो सकता। इस तथ्य को मनोविज्ञान भी स्वीकार करता है। अत: प्राथमिक अवस्था में ध्यान अथवा मनोनिग्रह का अर्थ मन की गति को परिवर्तित करना है, चिन्तन की दिशा को ऊर्ध्वगामी बनाना है, मन को दुर्वृत्ति से हटाकर सद्वृत्तियों की ओर उन्मुख करना है, सच्चिन्तन में मन को जोड़ना है। संक्षेप में शास्त्र की भाषा में कहे तो मन को अशुभ से शुभ की ओर परिवर्तित करना है।

इस प्रकार चित्तवृत्तियों का परिशोधन उदात्तीकरण एवं चेतना के प्रकाश का केन्द्रीकरण– यह सब ध्यान साधना के अन्तर्गत आता है। इस दृष्टि से जप साधना को भी ध्यान कहा जाता है। **"जपात् सिद्धिर्न संशय:।"**

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है– **"यज्ञानां जप यज्ञोस्मि।"** मैं यज्ञों में जपयज्ञ हूँ। जप मन को एकाग्र करने की एक सरल तथा श्रेष्ठ विधि है। जप की महिमा गाते हुए आचार्यों ने कहा है– जपात् सिद्धि:, जपात् सिद्धि:, जपात् सिद्धिर्न संशय:, जप से अवश्य सिद्धि प्राप्त होती है। जप से मन में तन्मयता एवं मधुरता का एक ऐसा प्रवाह उमड़ता है कि साधक उसमें आत्मविभोर होकर डूब जाता है, अपने को विस्मृत कर देता है और जप्य (ध्येय) में

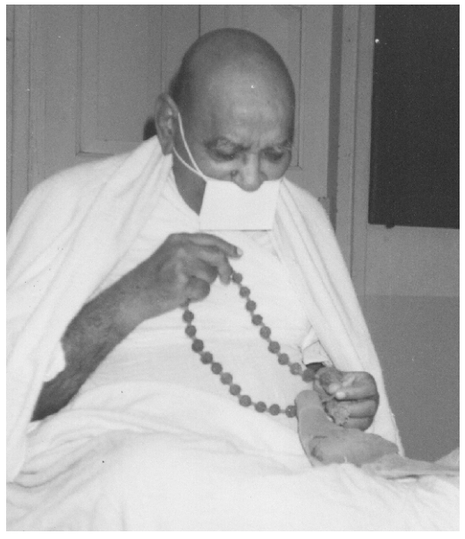

तदाकार होकर ऐक्यानुभूति करने लगता है। भक्तियोग में तो जप को श्रेष्ठतम साधना मानी गयी है। जप की साधना ध्यानयोग की भांति दुरूह भी नहीं है। साधना की प्रथम भूमिका में भी साधक इसके आनन्द की अनुभूति कर सकता है।

जप के तीन प्रकार

जप साधना का विश्लेषण करते हुए आचार्यों ने इसके तीन रूप बताये हैं- मानस, उपांशु और भाष्य।

भाष्य जप साधना की प्राथमिक श्रेणी है। साधक वाणी के द्वारा ध्वनि प्रधान श्रव्य उच्चारण करता हुआ जब स्तोत्र पाठ, माला आदि, द्वारा जप करता है, तो वह भाष्य जप है। इस जप में उच्चरित वाणी दूसरे भी सुन सकते हैं। वाणी का प्रयत्न अधिक होने के कारण इस जप में मन की स्थिरता बहुत कम रहती है। और तब साधक आगे बढ़कर दूसरी श्रेणी में पहुँचने का प्रयत्न करता है, वह है उपांशु जप। इस जप में साधक मन्त्र, स्तोत्र पाठ आदि का धीमें-धीमे स्वर से उच्चारण करता है। उसकी ध्वनि अन्य व्यक्तियों को सुनाई नहीं देती, अपने कानों तक अवश्य पहुँचती है। शब्द का स्पर्श जीभ और ओठों से होता रहता है। जीभ और ओठ हिलते भी हैं। पूर्व के जप की अपेक्षा इसमें वाणी का प्रयत्न मंद होता है, अतः इसमें पूर्वापेक्षया मानसिक एकाग्रता अधिक प्राप्त होती है।

मानस जप

इस जप में मन्त्र, स्तोत्र आदि के अर्थ का चिन्तन करते हुए केवल मन ही मन मन्त्र के वर्ण, स्वर एवं पदों की आवृत्ति की जाती है। मानसिक एकाग्रता की दृष्टि से यह जाप सर्वश्रेष्ठ माना गया है। आचार्यों के मतानुसार भाष्य जप से सौ गुणा श्रेष्ठ उपांशु जप और उससे हजारगुणा श्रेष्ठ है मानस जप।

चतुर्मुख जप

जप पद्धति में चतुर्मुख जप भी विशेष महत्त्वपूर्ण है। शब्द जप की अपेक्षा इसमें मानसिक एकाग्रता अधिक स्थायी एवं दृढ़ होती है। इस जप में पद्मासन, सिद्धासन आदि किसी एक आसन से बैठकर ध्यान मुद्रा बनाए, दोनों आँखों को हल्के से मूंद ले। फिर किसी बीजमंत्र का जाप करें। जैसे- ऊँ अर्हं आदि का मन ही मन ध्यान करें। ध्यान का क्रम इस प्रकार है-

अन्तर्मन के संकल्प से सर्वप्रथम दाये कन्धे पर मन्त्र की स्थापना करें। अर्थात् मानस कल्पना से मन्त्र की आकृति कन्धे पर लिखे, फिर बाये कंधे पर लिखे, फिर ललाट (दोनों भोहों के बीच) और फिर हृदय पर लिखे। इस प्रकार चार स्थान पर पुनः पुनः अपने इष्ट मन्त्र की आकृति स्थापित करते रहे। चार स्थानों पर मन्त्राकृति अंकित होने से यह चतुर्मुख जप कहलाता है। यह जप की श्रेष्ठ विधि है। एक प्रकार से ध्यान व जप की मिश्रित अवस्था है। अतः इसके द्वारा मन एकाग्रता की दिशा में अच्छी तरह साधा जा सकता है।

जप किसका?

जप करनेवाला साधक जानना चाहता है कि जप साधना में किस मन्त्र का जप किया जाय? जो श्रेष्ठ मन्त्र माने गए हैं उनमें से जो मन्त्र आप सरलता से बोल सके उसका चयन करें। यह ध्यान रखे कि मन्त्र के अक्षर जितने कम हो जिससे उच्चारण करते समय दीर्घ शान्त श्वास लिया जा सके वह मन्त्र ले। जैसे- **'ऊँ'** यह एकाक्षरी मन्त्र है। इसके उच्चारण के साथ प्राणायाम की क्रिया भी स्वतः होती रहे और दीर्घ श्वास भी लिया जा सके। **'अर्हं'** का भी तथा **'ऊँ'**, **'अर्हं'** दोनों साथ भी लिया जा सकता है।

मन्त्र का चुनाव करते समय ध्येय स्वरूप का ध्यान रखा जाय तो और भी श्रेष्ठ है। जैसे **'ऊँ'** के उच्चारण के साथ ही ध्येय रूप अरहन्त, सिद्ध आदि पांच पदों के स्वरूप का चित्र मानस चक्षु के सामने चित्रित हो जाना चाहिए। जैन परम्परा में **'ऊँ'** नवकार मन्त्र का बीज मन्त्र माना गया है। इसमें अर्हन्त का **'अ'**, सिद्ध जो अशरीरी है उसका **'अ'** आचार्य का **'आ'** उपाध्याय का **'उ'** तथा मुनि (साधु) का **'म्'** इन ध्वनियों का ग्रहण किया गया है।

ध्यान के भेद

जप और ध्यान की प्रक्रिया बहुत कुछ समान होते हुए भी बहुत भिन्न-भिन्न भी है। जप में जहाँ एक ही मन्त्र एवं पद की आवृत्ति अर्थात् बार-बार चिन्तन व उच्चारण किया जाता है, वहाँ ध्यान में किसी एक विषय पर चिन्तन-अनुचिन्तन की अखण्ड धारा प्रवाहित होती रहती है। जप साधना की अपेक्षा ध्यान साधना में मानसिक चिन्तन अधिक स्थिर एवं निर्मल होता है। इस दृष्टि से ध्यान साधना जप से अधिक महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ मानी जाती है।

स्थानांगसूत्र आदि प्राचीन आगमों में ध्यान के अनेक भेद प्रभेद वर्णन किये गये हैं। योगशास्त्र, ज्ञानार्णव, तथा तत्त्वानुशासन आदि ग्रन्थों में पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ एवं रूपातीत आदि अनेक ध्यान विधियाँ बताई हैं, जो प्राथमिक ध्यान साधक के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

पिण्डस्थ ध्यान

किसी शान्त एकान्त स्थान में सिद्धासन, पद्मासन आदि किसी श्रेष्ठ आसन से बैठकर पिण्डस्थ ध्यान किया जाता है। पिण्ड का अर्थ है- शरीर। अतः पिण्डस्थ ध्यान का मतलब हुआ

पिण्ड अर्थात् देह के प्रमुख अंग- ललाट, ब्रह्मरंध्र, आज्ञाचक्र, कण्ठ नासिकाग्रभाग तथा नाभिकमल आदि पर मन को केन्द्रित करना।

प्राचीन आचार्यों ने पिण्डस्थ ध्यान के क्रम में पार्थिवी, आग्नेयी, मारूती, वारूणी एवं तत्त्ववती धारणा नामक पांच धारणाओं के माध्यम से उत्तरोत्तर आत्मकेन्द्र पर ध्यानस्थ होने का वर्णन किया है। इन धारणाओं में साधक सर्वप्रथम अपने को पार्थिवी धारणा में कमल पर समासीन देखता है। फिर आग्नेयी धारणा में चारों ओर अग्नि ज्वालाएँ दहकने की कल्पना करता है, जिनसे शरीर भस्म होकर अन्तर में से हस्त-पादादि अवयवों से रहित केवल घनपिण्ड रूप देहाकार **'आत्मा'** चमकने लगता है। अनन्तर वायवी धारणा में वायु के प्रबल झोकों से राख उड़ जाने की और तदनन्तर वारूणी धारणा में सघन जल वर्षा से सब ओर से धुलकर आत्मा का शुद्ध प्रकाशमय रूप प्रगट हो जाने की कल्पना करनी चाहिए। इस प्रकार धारणाओं की कल्पना के माध्यम से साधक उत्तरोत्तर आत्मस्वरूप तक पहुँचने का प्रयत्न करता है।

उक्त पिण्डस्थ ध्यान को विकसित व अधिक स्थिर बनाने के लिए **'आज्ञाचक्र'** को समझना आवश्यक है।

आज्ञाचक्र

ध्येय पर मन को केन्द्रित करने के लिए साधना विधि में **'आज्ञाचक्र'** का अपना विशिष्ट महत्त्व है। इससे बाहर में विभिन्न विषयों पर भटकता हुआ मन केन्द्र पर स्थिर हो जाता है, और उसी विषय में चिन्तन मनन का प्रवाह आगे बढ़ने लगता है।

आज्ञाचक्र का अर्थ है- भ्रूमध्य में ध्यान को केन्द्रित करना। सिद्धासन, पद्मासन आदि दृढ़ आसन से मेरूदण्ड [रीढ़ की हड्डी] को सीधा करके बैठ जाय, ध्यान मुद्रा लगाए और मानस चक्षु अर्थात् मन की आंखों से दोनों भ्रू के मध्य में देखने का प्रयत्न करे। इस अवस्था में आंखें खुली नहीं रहनी चाहिए, केवल कल्पना से ही भ्रूमध्य को देखा जाए और उस केन्द्र में **'ॐ'** या **'अर्हं'** की स्थापना करके उसी के स्वरूप का चिन्तन करें। भ्रूमध्य को योग की भाषा में **'आज्ञाचक्र'** कहते हैं। आज्ञाचक्र की साधना प्रारम्भ में कुछ कठिन प्रतीत होती है, किन्तु निरन्तर के अभ्यास से यह साधना सरल बन जाती है और बहुत ही आनन्दप्रद प्रतीत होती है। हां, वृत्तियों एवं शरीर के साथ हठ नहीं करना चाहिए। शनैः शनैः इस ओर बढ़ना चाहिए। मेरा अपना अनुभव है कि कुछ दिन सतत् अभ्यास के पश्चात् इस अवस्था में मन की निर्विकल्पता बढ़ने लगती है, मन सहज में ही स्थिर एवं वृत्तियाँ शान्त होने लगती है। तथा मानसिक उल्लास, प्रसन्नता एवं ताजगी का अनुभव होता है।

पदस्थ ध्यान

पदस्थ ध्यान का अर्थ है पदों पर ध्यान केन्द्रित करना। यो तो साधक अपनी रूचि व

कल्पना के अनुसार किसी भी प्रकार के संकल्प बना सकता है और उन पर मन को स्थिर करने का प्रयत्न कर सकता है। उदाहरण स्वरूप हम एक विधि का उल्लेख कर देते है, जो जैन योग साधना में **'सिद्धचक्र'** के नाम से प्रसिद्ध है।

सिद्धचक्र

सर्वप्रथम ध्यानयोग्य आसन से स्थिर बैठकर हृदय कमल पर अष्टदल श्वेतकमल की कल्पना करनी चाहिए। जब अष्ट पंखुड़ियों की स्पष्ट कल्पना होने लगे, मन उस पर जम जाए, तब कमल की कणिका (कमल का मध्यभाग, बीजकोष) पर **'नमो अरहंताणं'** की कल्पना करें। फिर कमल की पूर्व-पश्चिम-दक्षिण-उत्तर की चारों दिशाओं की पंखुड़ियों पर क्रमशः **'नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं एवं नमो लोए सव्वसाहूणं'** पर ध्यान केन्द्रित करें। इसके पश्चात् ईशान आदि कोणों की विदिशाओं की चार पंखुड़ियों पर क्रमशः **'नमो णाणस्स, नमो दंसणस्स, नमो तवस्स और नमो चरित्तस्स'** की कल्पना करनी चाहिए।

योगशास्त्र में आचार्य हेमचन्द्र ने नाणस्स आदि के स्थान पर एसो पंच नमोक्कारो आदि चूलिका पदों की स्थापना करने की सूचना दी है।

इस प्रक्रिया का मुख्य प्रयोजन यही है कि मन बार-बार इन्हीं केन्द्रों पर आवर्तन-प्रत्यावर्तन करता रहे। इसका यह परिणाम होता है कि अन्य विषयों से वृत्तियों की पकड़ ढीली हो जाती है, और मन स्वयं चालित चक्र की भांति केवल इन्हीं केन्द्रों पर चलता रहता है।

अक्षर ध्यान

पदस्थ ध्यान में अक्षर ध्यान की प्रक्रिया भी प्रचलित है। वस्तुतः अक्षर का अर्थ है- अविनाशीत्व- परमात्मा, सिद्ध भगवान किन्तु यहाँ अक्षर से अभिप्राय वर्णमाला के अक्षरों से है। इसमें शरीर के तीन केन्द्रों पर अर्थात् नाभिकमल, हृदयकमल एवं आज्ञाचक्र पर क्रमशः सोलह पंखुड़िवाले, चोबीस पंखुड़िवाले तथा आठ पंखुड़िवाले कमल की कल्पना की जाती है। और उन पर वर्णमाला के अक्षरों की संरचना करके प्रत्येक अक्षर पर स्वतन्त्र चिन्तन किया जाता है। जैसे- अरहन्त, अमर, अविनाशी, अभय आदि अक्षरों की कल्पना करके प्रत्येक अक्षर के वाच्य स्वरूप की गहराई का चिन्तन करना चाहिए।

वर्द्धमान महावीर

– उपाध्याय अमरमुनि

महावीर वर्धमान है। वर्धमान अर्थात् हर क्षण बढ़ता रहनेवाला, अग्रसर होता रहनेवाला। और जो महावीर होता है वही वर्धमान होता है और जो वर्धमान होता है वही महावीर होता है। दोनों अन्योन्याश्रित है।

एक शब्द है वृद्ध। वृद्ध का अर्थ है- जो बढ़ चुका है, जिसका आगे का विकास रुक गया है उसे अब और बढ़ना नहीं है। वृद्ध यानि बूढ़ा। वृद्ध अतीत का प्रतिनिधि है, भविष्य का नहीं। और जो ऐसा वृद्ध है वह जीर्ण है, और जो जीर्ण है वह मरण के तट पर है।

महावीर वर्द्धमान है, हर क्षण युवा है, वृद्ध नहीं है, वे अब भी हर क्षण वर्द्धमान है, उनका ज्ञान वर्धमान है, दर्शन वर्धमान है, हर गुण वर्धमान है। जो केवलज्ञान उन्होंने पाया था, क्या वह वैसा ही सदा रहता है, बदलता नहीं है, आगे विकसित नहीं होता है? भ्रम में न पड़िए। गुण दृष्टि से भले ही वह सदा एक-सा है, परन्तु पर्याय दृष्टि से तो वह हरक्षण बदलता रहता है। अबतक असंख्य बार बदल भी चुका है, वह हरक्षण नव पर्याय की उपलब्धि के रुप में आगे बदलता जा रहा है। अत: मैं कहता हूँ, महावीर वर्धमान है, वृद्ध नहीं।

जीवन का एकमात्र चिह्न है गति और विकास।

सज्जन व्यक्ति के 5 लक्षण

1. स्वभाव में नम्रता
2. वाणी में मधुरता
3. हाथों में उदारता
4. चेहरे पर प्रसन्नता
5. हृदय में दया

साधना की लोकोन्मुखी अधिदेवता

महिमामयी आचार्य चन्दनाश्रीजी
-विद्यावाचस्पति डॉ॰ श्री रंजनसूरि देव
पूर्व व्याख्याता, प्राकृत शोधसंस्थान, वैशाली

[बिहार की भूमि में पिछले कई दशकों से वीरायतन द्वारा किया जा रहा ज्ञान, कर्म और सेवा का अव्याख्येय तप हजारों-हजार लोगों की श्रद्धा का केन्द्र है जिसमें बिहारवासियों की विशिष्ट आस्था, आदर, प्रेम व सम्मान इस श्रद्धास्थली को अनूठे ढंग से गौरवान्वित करते रहे हैं। प्रतिवर्ष हजारों जैन तीर्थयात्रियों के साथ बड़ी संख्या में समस्त धर्मावलंबियों का यहां आगमन, इस पुण्यस्थली के प्रति लोगों के आकर्षण का द्योतक है।

बिहार के गौरव को पुनर्जीवित करती इस तीर्थभूमि के प्रति श्रद्धाव्यक्त होकर आगन्तुकों द्वारा समय-समय पर अनुशंसा अभिव्यक्त की ही जाती रही है लेकिन एक मनीषी बिहार राज्य के गण्यमान्य विद्वानों में आदरास्पद स्थान पर पदासीन श्री रंजनसूरि देवजी द्वारा आचार्य चन्दनाश्रीजी के जन्मदिवस पर उनकी अतुलनीय कृति पर भावाभिव्यक्ति अंकित हुई है, जो आचार्यश्री के जन्मदिवस की शत्-शत् शुभकामनाओं के साथ प्रस्तुत है।]

बिहार की प्रागैतिहासिक पुण्यभूमि राजगृह में प्रतिष्ठित वीरायतन ऐतिहासिक जैनतीर्थों में मुकुटमणि की गरिमा आयत करता है। वीरोदय की गौरवमयी गाथा से अनुगुंजित तथा ज्ञानदीप्त साधना का महामहिम प्रतिष्ठान यह वीरायतन अपने आप में तप और त्याग का एक मनोरम महाकाव्य बन गया है। इस वीरायतन के कण-कण में एक अनिर्वचनीय आकर्षण है परन्तु आसक्ति तनिक भी नहीं; ममता और दया यहाँ के अणु-अणु में अन्तर्निहित है, किन्तु मोह या परिग्रह का लेश लवमात्र भी नहीं है। वीरायतन का स्थापत्य अपने आप में जीवित वास्तुकला का वह महनीय प्रतिरूप है, जिसके अन्त:स्थित भव्योज्ज्वल वास्तुपुरूष के करूणादीप्त मुखमण्डल पर अखण्ड शान्तिश्री अहर्निश विराजमान रहती है। कर्पूर प्रतिमा जैसा अन्तर्हृदय लोकोदयकारी धर्म के चिन्तन और जन-जन की आंखों पर ज्ञानांजन की शलाका फेरने वाले अनेकान्तवादी दर्शन के अनुचिन्तन

से मुखरित और स्पन्दित रहता है।

अकर्म से कर्म की ओर

वीरायतन जैन विज्ञान या जैन विद्या का एक ऐसा अपूर्व आयतन है जहाँ तीव्र ज्ञानपिपासा के समक्ष भोगलिप्सा की पूर्ण विरति हो जाती है। अकर्म से कर्म की ओर प्रस्थान ही वीरायतन का जीवन दर्शन है। वहाँ कषाय के अवसाद को कभी अवकाश नहीं मिलता, वरन् वहाँ के रन्ध्र-रन्ध्र में पंचव्रत की निष्कम्प दीपशिखा प्रतिक्षण प्रज्वलित रहती है। वीरायतन में अनवरत अनुनादित अहिंसा की सुधामयी स्वरलहरी में शास्त्र की एक ऐसी अनोखी बुभुक्षा रहती है जिसमें शस्त्र की प्राणातिपाती तृष्णा को आत्यान्तिक समभाव प्राप्त होता है। वहाँ सत्य के अस्तित्व का एक ऐसा अपूर्व आतिशय है, जिसके विस्तार में मिथ्यात्व को भी सत्य की तात्त्विक जिज्ञासा हो आती है। अदत्तादान विरति के विमल जल से तो वीरायतन का तृण-तृण सिंचित है, इसलिए वहाँ स्तेय की अशुचिता कभी नहीं होती। वहाँ ब्रह्म एक सजग प्रहरी की तरह अपने धनुष को निरन्तर प्रत्यंचित रखता है, परिणामत: 'अब्रह्म' श्वापद की भांति ज्ञानाग्नि का शरण्य बन जाता है। वीरायतन अपरिग्रह का तो विश्राम स्थल ही है, जहाँ परिग्रह प्रतिपल हीनदर्प बना रहता है। विषयगत निस्संगता, रागद्वेषमूलक भावों से अनासक्ति और सुखदु:ख की अनुभूति के प्रति निद्वन्द्वता ही वीरायतन की मौलिक पहचान है। इसलिए उसकी शोभा प्रत्येक दर्शक के नेत्रों की कड़वाहट को सुकून देनेवाली स्निग्धता से आसिंचित कर देती है।

प्राणवाहिनी नाड़ी

वीरायतन को यह प्राय: दुर्लभ सौभाग्य सुलभ हुआ कि उसे जैनधर्म दर्शन के शलाकापुरूष पुण्यश्लोक महामहिम उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज की एक साथ तपोभूमि और निर्वाणभूमि बनने की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। मुनिश्री वीरायतन की प्राणवाहिनी नाड़ी के समान थे। आज भी वहाँ की भूमि में मुनिश्री के दिव्य स्पर्श और अमृतमय शब्द की साकार उपस्थिति की रहस्यपूर्ण प्रतीति होती है।

महावीर के तपोमार्ग के अनुसरण में सदा तत्पर चन्दनाश्रीजी सच्चे अर्थ में वीरांगना है; कर्म और ज्ञान की विग्रहवती प्रतिमा है। आचार्यश्री चन्दनाजी कान्तिमयी करूणा की प्रतिमूर्ति है। श्वेतवस्त्र की पृष्ठभूमि में अवस्थित उनकी ऊर्जस्वल कायिक शोभा-सम्पत्ति ज्ञानाग्नि से दीप्त होकर शतगुण समृद्धिशालिनी हो गई है। करूणाद्रवित उनका विशाल हृदय समता और शान्ति के सौरभ से सतत् अनुध्वनित है।

चिन्तन का चरम लक्ष्य

आचार्य चन्दनाश्रीजी विचारों से अनेकान्तवादिनी है तो अभिव्यक्ति की दृष्टि से स्याद्वाद की पण्डिता हैं। विभिन्न धर्मों के

प्रति सहिष्णुता आचार्यश्रीजी की आध्यात्मिक पहचान है 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' जैसी सूक्ति उनकी चिन्तन-धर्मिता का सहज अंग बनी हुई है। व्यष्टि भावना से समष्टि की ओर प्रस्थान और फिर उसका परमेष्ठि में पूर्ण विराम ही उनके चिन्तन का चरम लक्ष्य है। व्यक्ति से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व का सर्वोदय ही उनके जीवन की महत्त्वाकांक्षा है। उनका आश्रय पाकर धर्म और दर्शन मानो रूपवान हो उठे हैं। उनके पीयूषवाही प्रवचन से निष्क्रिय हृदय सक्रिय हो उठते हैं और निश्चेष्ट मस्तिष्क सचेष्ट हो जाते हैं।

दिव्य सन्देश वाहक

महाश्रमणी आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी जैन साध्वियों में पांक्तेय ही नहीं, वरन् धुरिकीर्तनीया है। जैन धर्म को जनधर्म बनाने का उनका निश्चय हिमालय की तरह अडिग है। उनका संकल्प दृढ़ है और आत्मविश्वास अविचल। यही कारण है कि उनके निर्देशन में संचालित वीरायतन का विश्व कल्याणकारी कार्य सीमान्तपारगामी बन गया है। जैन धर्म दर्शन के तीन मुख्य बिन्दु-अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त के दिव्य संदेशवाहक के रूप में वीरायतन ने जो सार्वभौम प्रतिष्ठा आयत्त की है, उसका समस्त श्रेय आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी को है। उन्होंने तीर्थंकर महावीर के लोकोदयकारी संदेश को बहुजनसम्प्रेरित करने की दिशा में जो महनीय कार्य किया है वह इतिहास के पृष्ठों में सगौरव उल्लेख्य है।

भूमि की विलक्षण महिमा

आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी के निर्देशन-प्रामुख्य में कार्यशील प्रतिष्ठान वीरायतन-भूमि की महिमा ऐसी विलक्षण है कि वहाँ उच्छृंखलता स्वत: मर्यादित हो जाती है। थोथा-से-थोथा श्रुति-संवेदन वहाँ की साधना-शिला पर रगड़ खाकर धारदार हो जाता है। वहाँ शुचिता सदैव सतर्क और उद्ग्रीव रहती है और स्नेह की सरलता उद्दण्ड को भी विनम्रता सीखाती है। वहाँ शास्त्रों की झंकार में जीवन का संगीत निनादित होता है। वहाँ की

भाषा-समिति के समक्ष दर्पोद्धत गर्वोक्ति तुषाराहत पद्मिनी की भांति परिम्लान हो जाती है; जहाँ के पर्यावरण के अन्तराल आलोक से जगमगाती ज्ञानज्योति काषायित आंखों को संज्ञा-स्निग्ध आलोक से प्रसन्न और निष्कलुष कर देती है। वहाँ की प्रत्येक रात्रि प्रभु की सेवा में श्रद्धादीप्त आरती जलाती है तो प्रत्येक दिवस प्रभु की पूजा से उत्सव स्वरूप बना रहता है।

योग्य आचार्य योग्य शिष्याएँ

महतोमहीयान 'वीरायतन' और उसकी लोकहितैषिणी अधिदेवता महतोमहीयसी आचार्य चन्दनाश्रीजी दोनों एक दूसरे का पर्याय है। वहाँ की साध्वियाँ अपनी योग्य आचार्य की योग्य शिष्याएँ हैं। सब की सब तपोदिप्त, सब की सब सरस्वती कल्प। ऐसी सरस्वती, जो पल्लवग्राहियों से कभी नहीं डरती। विविध विद्याएँ जैसे उनकी स्वयम्भूत सखी सहेलियाँ हैं राजगृह की उपत्यका में अवस्थित वीरायतन ज्ञानदेव का पुंजीभूत प्रकाश है और वाग्देवी के ज्ञानधौत वेशविन्यास का अकल्मष समुज्वल रूप है। वीरायतन का सामाजिक हृदय यदि नवनीत-मृदुल है, तो साधनागत मन वज्रसार और दृढ़व्रत है।

महती साधना-भूमि

वीरायतन में दया-दाक्षिण्य सदा एक और अविभाज्य बना रहता है। वहाँ की आत्मभावना मानव जीवन को उदात्त बनाती है। वहाँ की त्यागवृत्ति दाता और ग्रहीता दोनों को सार्थक करती है। निस्सन्देह वीरायतन शोभा और सौहार्द, उत्कर्ष और अभ्युदय, तप और त्याग, ज्ञान और चिन्तन एवं आत्मशान्ति और भावविश्रान्ति की महती साधनाभूमि है और उसमें विराजित आचार्य चन्दनाश्रीजी की भूमिका साक्षात् साधना की लोकोन्मुखी अधिदेवता का भावबोध कराती है।

आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी के जन्मदिवस पर मेरी आन्तरिक कामना है कि आचार्यश्रीजी का अनन्त चतुष्टय सम्पन्न मंगलमय जीवन दीर्घायु हो।

जीव त्वं शरदः शतम्

मुस्कुराते रहिए

उम्र बढ़ने से मुस्कराहट नहीं रुकती।
लेकिन मुस्कराहट रुकने से उम्र जल्दी बढ़ जाती है।

कानून और नैतिकता

-उपाध्याय अमरमुनि

[देश की आज की स्थिति पर मार्गदर्शक पूज्य गुरूदेव का चिन्तन]

जब हम सुशासन अथवा अनुशासन की बात पर विचार करते हैं, तब हमारे समक्ष दो विचार उभर कर आते हैं। पहला- क्या कानून नैतिकता को स्थापित कर सुशासन स्थापित करने में समर्थ हैं? अथवा दूसरा कि क्या नैतिकता का कानून सुशासन स्थापित करने में सक्षम नहीं? प्रश्न कुछ अजीब तरह का है, किन्तु यह सर्वथा विचारणीय है। व्यावहारिक जीवन में प्रायः देखा जाता है कि कानून समाज में नैतिकता की स्थापना करने में समर्थ है, ऐसी बात नहीं। यदि ऐसी बात होती तो समाज के बीच व्याप्त नानाप्रकार के अत्याचारों के विरूद्ध न जाने कितने पहले कानून बना दिए गए, उन पर सख्ती से अमल भी किया गया, किन्तु हुआ वही-

दवा ज्यो-ज्यो करते गये मर्ज बढ़ता गया।

दूसरी बात यह कि आप अदालतों की घटनाओं पर भी विचार करके देखें। एक व्यक्ति की अमुक व्यक्ति के द्वारा हत्या कर दी जाती है। पुलीस और अन्य अधिकारी वर्ग उस सम्बन्ध में प्रयास करता है। किन्तु चान्दी के चन्द सिक्के से निर्मित बुलन्द इमारतों से जो इन्साफ के कतिपय उदाहरण देखे जाते हैं- एक सोचनीय प्रश्न है। उस क्रम में एक निर्दोष इन्सान जिसका उक्त हत्या से कोई सम्बन्ध नहीं होता, हत्यारा घोषित हो जाता है। यहाँ तक कि फाँसी के फंन्दे तक को उसे अपने गले में डालना पड़ता है, तथा दूसरी ओर जो वास्तव में हत्यारा होता है वह बेदाग बच जाता है। अब आप ही सोचें, उस निर्दोष इन्सान की हत्या का दोषी यह कानून नहीं तो और कौन है? फिर इस कानून को कौन फांसी दे? क्या इससे साफ जाहिर नहीं होता कि कानून हर दशा में सुशासन अथवा सुव्यवस्था का हामी नहीं हो सकता?

दूसरी ओर हमारे समक्ष जो प्रश्न है, वह है नैतिकता के कानून का। वस्तुतः वह मार्ग, जिस पर चलने से व्यक्ति को न स्वयं की

हानि हो और न समाज को हानि उठानी पड़े, यही एकमात्र नैतिकता का कानून है। हम अमर्यादित न हो, तथा दूसरे को भी अमर्यादित न करें, इससे बढ़कर कानून और क्या हो सकता है? किन्तु जब कोई व्यक्ति उक्त नियम [अपने को मर्यादित रखना तथा दूसरे की मर्यादा का ख्याल रखना] का उल्लंघन करता है, तब उसे दण्डित करना भी आवश्यक हो जाता है। किन्तु दण्ड भी सुधारात्मक हो विघातक नहीं।

कानून और नैतिकता का समन्वय :

यहाँ हम इस विचार भूमि पर आ पहुँचते है कि कानून जब नैतिक मार्गों का त्याग कर देता है, तब वह उच्छृंखलता का पोषक भर बनकर रह जाता है, उससे सुव्यवस्था की जगह अराजकता को ही प्रश्रय मिलता है। दूसरी ओर कानून विहीन नैतिकता सुशासक विहीन आदेश की तरह निरादृत होकर रह जाती है। अत: यह स्वीकार्य तथ्य है कि कानून का पथ नैतिकता हो। कानून सुव्यवस्था एवं सुशान्ति लाने के लिए नैतिक मार्गों का अनुसरण करें और नैतिकता अपने मार्ग एवं उद्देश्य के स्थायित्व के लिए कानून का सहारा ले। दोनों परस्पर में सहयोगी बनकर ही सही अर्थ में सुशासन, सुव्यवस्था एवं सुशान्ति की स्थापना कर सकते हैं। सिर्फ कानून ही सबकुछ नहीं और सिर्फ नैतिकता ही अलम् नहीं।

लवणाकर या रत्नाकर

एक बार पूज्य गुरुदेव से एक भूगोल का विद्यार्थी बोला समुद्रों ने संसार का विशाल भू-भाग व्यर्थ ही रोक रखा है। समुद्र का पानी भी खारा है, न पीने के काम आता है और न सिंचाई के, इसीलिए इन्हें लवणाकर कहते हैं।

गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा- लवणाकर तो ठीक है, पर वह रत्नाकर भी तो है। यदि आदमी बुद्धि से काम ले, जागृत होकर चले तो उससे लाभ भी उठा सकता है। बहुमूल्य मोतियों का खजाना कहाँ मिलता है? अनुपम रत्नों का भण्डार कहां छिपा है? किन्तु जो परिश्रमी हैं, साहस और विवेक से काम करते हैं उनके लिए वह 'रत्नाकर' भी है।

यह जीवन भी समुद्र है। आलस्य और बुद्धिहीनता के शिकार व्यक्ति के लिए यह जीवन लवणाकर के तुल्य निकम्मा है परन्तु पुरुषार्थ और विवेक से काम किया जाय तो यही जीवन रत्नाकर के समान अमूल्य खजानों का भंडार भी है।

–उपाध्याय अमरमुनि

वीरायतन कच्छ में सम्पन्न त्रिदिवसीय कार्यक्रम में 27 जनवरी गोल्डन जुबली के असवर पर डॉ. श्री अभयजी फिरोदिया के उद्‌गार

वीरायतन का स्वर्ण महोत्सव

वीरायतन संस्थान के 50 वर्ष की पूर्णता के शुभ अवसर पर हम सब यहाँ एकत्रित हुए हैं। वीरायतन का संगठन, वीरायतन का बनना, वीरायतन का कार्य शुरू होना यह हमारे समाज में, हमारी विचार धारा में, हमारे देश के इतिहास में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना है। इस मुवमेन्ट को, इस क्रान्ति को जन्म देनेवाले, दिशा देनेवाले, इस क्रान्ति को प्रगतिपथ पर ले जानेवाले आचार्य चन्दनाश्रीजी है, यह हम सब जानते हैं। कल 86वाँ जन्मदिवस हमने सेलिब्रेट किया, आज हम वीरायतन के पचास वर्ष सेलिब्रेट कर रहे हैं। वीरायतन क्या है, क्युं है, कैसे हुआ, कहाँ जा रहा है, उसका महत्त्व क्या है? क्या वीरायतन एक Eye Hospital है? एक स्कूल है? एक सोसाइटी है? या वीरायतन उससे बड़ा एक तूफान है? यह हमें समझ लेना है। मानवीय संस्कृति के उत्कर्ष में बहुत सारे, बड़े-बड़े व्यक्तियों ने योगदान किया है। आज अगर हम यहाँ बैठे हैं इस आधुनिक जगत में, इस आधुनिक व्यवस्था में तो हमें अवश्य इस बात पर सोचना होगा कि इस प्रगति में जरूर बहुत सारे लोगों ने बहुत ज्यादा प्रयत्न किया होगा। यह प्रगति कोई एक दिन में नहीं हुई है। हजारों वर्षों में हुई है। अगर हम इतिहास पढते

हैं तो हमें जानना होगा उन महापुरूषों ने हमारे देश को, हमारे समाज को एक दिशा दी है। महावीर ने एक बड़ी महत्त्वपूर्ण चीज दी है वह है- अनेकान्तवाद! यह भारत के विचार सरणी का बेक बोन है।

भारत की कोई भी धर्म संस्था है, विचार प्रवाह है, जैन, बौद्ध, वैदिक, अनेक विवाद भी है उनमें। लेकिन एक बात सर्वमान्य है कि धर्म के नाम पर झगड़ा नहीं करना। यही है अनेकान्तवाद! तु भी ठीक! मैं भी ठीक! अहिंसा की चर्चा सूक्ष्म जीवों की अहिंसा की बात, और अहिंसा के अन्दर रह कर हमारी दिनचर्या! इस पर हमारे विचार, हमारा मन, हमारी क्रिया केन्द्रित हो गई। भगवान बुद्ध, जो भगवान पार्श्वनाथ के साधु संघ के साथ दस वर्ष तक भारत भर घूमे। उसके बाद उन्हें ज्ञान हुआ कि मुझे अपने शरीर को कष्ट नहीं देना है। मेरा ध्येय दु:ख निवारण है। यह उनकी सोच है। हम बहुत छोटे हैं। हम यह नहीं कह सकते कि भगवान बुद्ध का विचार गलत था। दुनिया ने उनका विचार माना है। उन्होंने कहा कि अहिंसा मान्य है, परंतु मैं अपने आत्मा के उद्धार के लिए ही, दु:ख निवारण करूं, यह ठीक नहीं है। बहुत बड़ी बात है। उसके लिए मनोबल चाहिए। उसके लिए समझ चाहिए। उसके लिए साहस चाहिए। जिस व्यक्ति ने ऐसा साहस किया, उन्होंने इतिहास को बदला है। किसी भी नदी का प्रवाह कभी भी एक दिन में उत्तर से दक्षिण नहीं हो जाता। हमें पता है- नदियाँ अपनी दिशा बदलती है। नयी नदियों का

निर्माण होता है। ऐसे विचार हमारे इतिहास में, हमारे प्रबुद्ध समाज में हजारों वर्षों तक लोग लाते रहे हैं। यह जो वीरायतन का विचार है अंग्रेजी मे दो शब्द है **कम्पेशन इन एक्शन** ताई महाराज ने बताया- कि हमें हमारे मानव समाज को प्रोत्साहित करना है अपने कार्यों से। हमें हमारे समाज को आगे लेकर चलना है। हम मानवता की सेवा करे। यह कहना सरल है कि हम स्कूल चलाते हैं, हम हॉस्पिटल चलाते हैं। यह तो बहुत सारे लोग चलाते हैं। पर निस्पृह होकर समाज को साथ लेकर- ऐसी जगहों पर जाकर, जहाँ लोग जाने में कतराते हैं। वहाँ जाकर यह कार्य करना, अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है। वीरायतन की स्थापना जो ताई महाराज ने की है इसमें उनकी बहुत बड़ी सोच उनके विचार पारंपारिक जैन विचार से अलग थे। उन्होंने किसी भी चीज का इन्कार नहीं किया। उन्होंने कहा, "मुझे अगर मेरे आत्मा की उन्नति करनी है तो उसके साथ मुझे समाज की भी उन्नति करनी जरूरी है। समाज की उन्नति के लिए मुझे समाज को साथ लेकर चलना है। मुझे दु:ख निवारण करना है, मुझे अहिंसा को प्रस्थापित करना है। यह सब वीरायतन के विचारों में समाहित है। साधना, सेवा, शिक्षा ये तीन शब्द है- महत्त्वपूर्ण शब्द है। साधना! लोग आयु बिता देते हैं साधना करने में। सेवा- हमने कितने लोगों को देखा- हमारे आँखों के सामने विनोबाजी महात्मा गांधी- कितने ही लोगों ने पीडितों की, गरीबों की सेवा की है। शिक्षा- आज शिक्षा की तरफ देखने का रवैया थोड़ा बदल गया है। हमारे देश में बहुत सारे लोग हैं- सोचते हैं- शिक्षा याने हायर एज्युकेशन मुझे बहुत दु:ख होता है- जब मैं सुनता हूँ- देश के विद्वानों को कहते हुए कि हमने IIT किया, इसलिए हम श्रेष्ठ हैं। मेरा अत्यंत विनम्रतापूर्वक कहना है कि ठीक है। IIT, IIM महत्त्वपूर्ण है। पर क्या आपने अपने समाज के बच्चों को संस्कार दिये हैं? अगर आप ये संस्कार नहीं दोगे और सिर्फ सायन्टिफिक नोलेज दोगे तो आपका समाज शुद्ध नहीं हो सकता। आपके समाज में जो आस्था चाहिए वो नहीं आयेगी। तो वीरायतन इन दोनों चीजों के बारे में विचार करके आज अगर आप देखें तो वीरायतन के हरेक विद्यालय ऐसी जगह पर है जहाँ लोग जाने में डरते हैं। वहाँ केवल शाला नहीं चलाते हैं। छोटे-छोटे बच्चों पर जो संस्कार हो रहे हैं मुझे कहते हुए अत्यंत हर्ष होता है। मैंने सुना है कि राजगीर में जो शाला हैं, पावापुरी में, लछुवाड़ में जो शाला हैं वहाँ अनेक बच्चे जो पढ के तैयार हुए हैं, जो जैन कुटुंबों में से नहीं थे पर वो वेजिटेरियन हो गये हैं। प्राणिमात्र के प्रति सजग हो गये हैं।

उन्होंने अपने परिवारों को परिवर्तित किया। उनके संस्कार बदलें। जब हमारे देश के बच्चें इन संस्कारों से संस्कारित हो जायेंगे इस चीज का महत्त्व समझेंगे तो वे ही आगे चलकर हमारे देश को बढाने वाले, हमारे समाज को सुधारनेवाले होंगे। सिर्फ उच्च शिक्षा और रोकेट उड़ान और टेक्निकल तरक्की करना यह हमारे शुद्ध सम्पन्न समाज का पूर्ण समाधान नहीं है। वीरायतन ने शिक्षा का महत्त्व समझ कर शिक्षा के लिये प्रयास किया है। सेवा- जहाँ करना जरूरी है। वीरायतन कर रहा है। दिल्ली में या बॉम्बे में हॉस्पिटल खोल सकते थे। या बहुत सारे जगहों में- अगर ताई महाराज खड़े होकर बोल देते कि हमें 500 करोड़ रू॰ इन्वेस्ट करना है। बहुत बड़ा इन्टरनेशनल स्टेण्डर्ड हॉस्पिटल खोलना है तो बहुत सारे लोग देने वाले थे। दे देते। जैन समाज में ऐसे-ऐसे दिग्गज हैं जो 50-50-100 करोड़ देते हैं और हर साल देते हैं। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। राजगीर में किया। 40 साल की उम्र तक मुझे राजगीर कहाँ है- पता भी नहीं था। मुझे पता था कि मेरे पिताजी वहाँ जाते हैं। क्युं जाते हैं? राजगीर का महत्त्व क्या है? नहीं पता था।

कच्छ! कभी कोई हमारे समाज के कच्छी है। उनको छोड़ो। बाकी हमारे समाज के लोग कभी यहाँ आये नहीं। तब पर्यटन था भी नहीं। पर यहाँ आकर पीड़ितों के लिए व्यवस्था करना यह साधारण व्यक्ति का काम नहीं है। इसके लिये जो साहस चाहिए, वह साहस- कोलंबस बास्कोडिगामा से बड़ा साहस है।

वीरायतन की स्थापना, वीरायतन के कार्य की दिशा, वीरायतन का मोटो यह सब लेकर, मशाल लेकर ताई महाराज पचास साल तक चले हैं- और समाज जोड़ते जा रहे हैं। अपने साध्वियों से समाज के साथ जो इन्टरप्रिटेशन है उसका आधुनिकिकरण करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। जैन परंपरा में साधु व्यवहार जो आज से ढाई हजार वर्ष पहले भगवान महावीर ने कहा है। उसका इन्टरप्रिटेशन ऐसा होता कि स्नान नहीं करना चाहिए साधु-साध्वियों को। सेनिटेशन की व्यवस्था का उपयोग नहीं करना चाहिए। माइक्रोफोन नहीं वापरना चाहिए। महावीर ने कभी माइक्रोफोन देखा नहीं। पर उसका विद्वानों ने इन्टरप्रिटेशन किया कि इलेक्ट्रिसीटी नहीं वापरनी क्योंकि उसमें सूक्ष्म जीवों की हानी होती है। होती होगी शायद। पर हमारे विचारों से यह बताया गया है कि अगर कोई हानि न होती हो, आत्मा को हानि नहीं होती हो तो ठीक है। आप अच्छे उद्देश्य से उपयोग करते हो, अगर माइक वापरने से, टीवी वापरने से और रिकॉर्डिंग करने से अगर आप कुछ अच्छा हांसिल कर

रहे हो तो करो। समाज के लिये मानवता के लिए इनका उपयोग करते हो तो करो। वीरायतन की साध्वियों के व्यवहार में, व्यवसाय में उनके एक्शन्स में बदलाव कराना, समाज के सामने खड़े होकर कहना कि मैं यह करती हूँ। भविष्य में मेरे प्रिन्सपल्स का किसी भी प्रकार का कॉम्प्रोमाइज नहीं है। यह कहने के लिए आत्मिक बल चाहिए। और इसी साहस के साथ पचास साल पहले उन्होंने इस संस्था का निर्माण किया। यह संस्था उनकी नहीं है जो मेम्बर्स हैं। मैं बारंबार यह बात कहता हूँ कि यह संस्था ताई महाराज की है। वीरायतन ताई महाराज है। अगर वो नहीं होते तो क्या हम लोग वीरायतन बना सकते थे? यह हमारी काबिलियत है? यह संस्थान उन्होंने बनाया है। हम बहुत भाग्यशाली है कि इस महत् कार्य में, इस आनंद की धारा में उन्होंने हमें शामिल किया है कि आओ मेरे साथ जुड़ो।

वैसे हर व्यक्ति इस प्रकार का रास्ता खोजता है। उसको दूसरों से अलग मूल्य अपनाने पड़ते हैं। और इन्होंने उचित मूल्य अपनाने के लिए समाज को प्रेरित किया। आज वीरायतन की साध्वियाँ कंप्युटर चलाती है, फोन करती है, कार चलाती है, गवर्नमेंट ऑफिस में जाती है। स्कूल का इलेक्शन करती है, ऑफिस का मेनेजमेन्ट करती है, फोरेन जाती है, वहाँ के समाज के साथ में इन्टरेक्शन करती है। उनको प्रबुद्ध करती है कि भाई- मानव सेवा के लिए कुछ करो। अपने लिए कुछ करो, इन संस्थाओं के लिए दान दो,। और लोग देते हैं। यह एक बहुत बड़ा एक नया प्रचंड प्रवाह है जो उन्होंने निर्माण किया है। हम इतिहास में इस घटना से बहुत नजदीक है। वीरायतन अभी सिर्फ पचास वर्ष का है। सिर्फ पचास वर्ष। एक दृष्टि से देखो तो पचास वर्ष का समय बहुत लम्बा होता है। दो पिढियों से ज्यादा है। मानव समाज के इतिहास में पचास वर्ष कुछ नहीं है। हम इतने नजदीक है इस घटना के कि हमें इसका आकलन होना मुश्किल है। आज से 500 साल बाद लोग बोलेंगे- वीरायतन का जो विचार था उसकी वजह से हम बहुत काम कर सके। हमने जैन समाज को कार्यान्वित किया। प्रभावित किया अपने संकुचित विचारों में से, अपने माला जाप से बाहर निकले। कुछ अच्छा कार्य करे। क्षत्रिय कौन होता है? भगवान महावीर क्षत्रिय थे। पर वो महावीर थे। वीर वो जो शत्रु का नाश करता है। महावीर वो जो शत्रुत्व का नाश करता है।

मुझे याद है मेरे पिता बहुत बिमार थे। हॉस्पिटल में थे अमेरिका में। मैं जाकर उनको बाजुवाले कमरे में बैठ कर उनसे बात करता था। तब मैंने उनसे पूछा कि बाबा! आपने बहुत

सारे कार्य किये हैं। आपने जवानी में स्वतन्त्रता संग्राम में तीन साल कारावास की शिक्षा भोगी है। आपने जबरदस्त इनोवेशन किये हैं। ओटो रिक्शा के वो जनक हैं। ओटो रिक्शा का कोन्सेप्ट उनका है। सत्तर साल से आज हिन्दुस्तान में ओटो रिक्शा लाखों की तादात में चलती है। और यह सब छोड़कर आप सेवा कार्य में लग गये हैं। तो आपको सबसे ज्यादा आनन्द किस में मिला? उन्होंने एक क्षण भी विलम्ब किये बिना कहा निश्चय ही मुझे समाज कार्य करने में जो आनंद मिला है। वह मैंने करोड़ों रूपये कमाये उसमें नहीं मिला। जब मैंने स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में भाग लिया, गांधीजी के नेतृत्व में, जो मुवमेन्ट चली थी उसमें मैं शामिल था। उससे भी अधिक आनन्द इस मानवता के कार्य में आया। मैं यह मानता हूँ, कि हमें इस मानवता के कार्य का महत्त्व समझना चाहिए। इसका ऐतिहासिक महत्त्व समझना चाहिए। सिर्फ आज के लिए नहीं, यह जैन समाज की विचार धारा के लिए एक नयी दिशा है। मैंने कुछ विद्वान साधु-संतों से भी बात की है, मैं नाम नहीं लूंगा। एक आचार्यश्री से मैंने कहा कि वीरायतन जो कर रहा है उसमें आपका क्या कहना है? तो बोले उचित है। इसकी हम सराहना करते हैं। हम वंदन करते हैं। तो मैंने कहा कि गुरूदेव आप ऐसा काम क्यूं नहीं करते हैं? उन्होंने कहा- हिम्मत नहीं होती। समाज बदलना यह कुछ मिनिटों का काम नहीं है। उसमें समय लगता है। और उन्होंने मुझसे कहा कि आप ध्यान में रखो- आगे चलकर वीरायतन की यह दृष्टि इतनी प्रचलित होगी कि जैन समाज के बहुत साधु-साध्वी इसमें शामिल होंगे। और साधु-साध्वी का वीरायतन के प्रवाह में शामिल होने का मतलब होगा कि जैन समाज का कर्तृत्व उसकी हिम्मत, उसकी दूर-दृष्टि, का विकास होगा। समाज सुधार के अंदर यह दूर दृष्टि बहुत काम आयेगी।

ताई महाराज! आपने वीरायतन का निर्माण किया, तब आपको कितनी दूर तक दिखता था, मुझे पता नहीं । मुझे तो कुछ भी नहीं दिखता था, जब मुझे मालुम हुआ कि वीरायतन यह करता है। पर आज पच्चीस साल वीरायतन के साथ रहने के बाद मुझे मालुम पड़ता है कि आपने जो प्रचंड काम किया है, यह समाज के लिये, सदियों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसको इतिहास याद रखेगा। आपको हम कोटी-कोटी प्रणाम करते हैं। कि आपने समाज के लिये जो वरदान दिया है- नयी दिशा दी है, नयी ऊर्जा दी है,- आपका हम जितना धन्यवाद करें, आपका जितना भी हम आभार माने वो कम है।

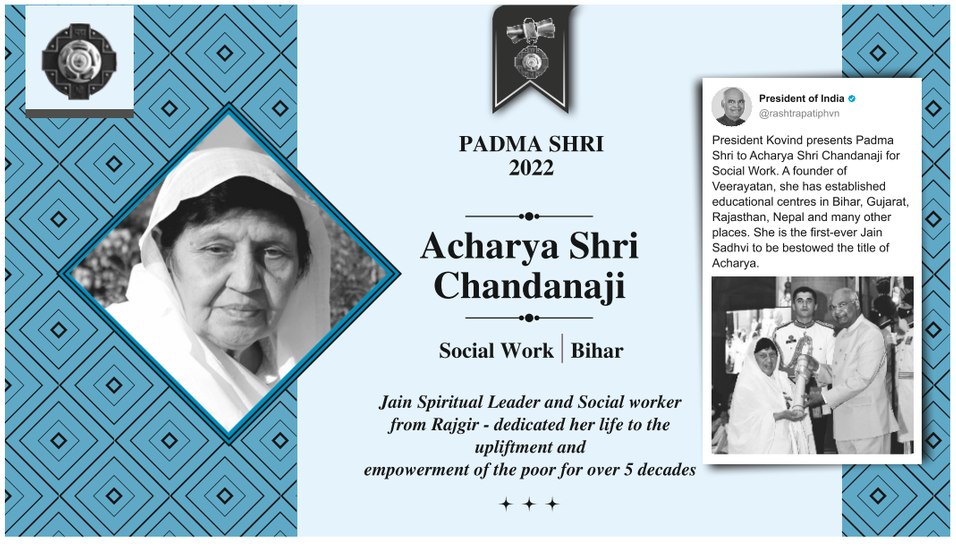

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक का एक हिंदी पृष्ठ

85 वर्षीय आचार्यश्री चन्दनाजी सक्रिय और ऊर्जावान जैन साध्वी हैं, जिन्होंने दुनिया भर में लाखों लोगों के जीवन को आलोकित किया है। वे वीरायतन की संस्थापक और आध्यात्मिक प्रमुख हैं, जिसे उन्होंने 50 साल पहले भारत के बिहार राज्य में स्थापित किया था। उनका मिशन सेवा, शिक्षा और साधना के माध्यम से जीवन को बदलना है। उन्हें 1987 में आचार्य की प्रतिष्ठित उपाधि दी गई, वह भगवान महावीर के समय से जैन तपस्वी समुदाय में यह पद पाने वाली पहली जैन साध्वी हैं।

26 जनवरी, 1937 को जन्मी आचार्य चन्दनाजी की आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत 14 वर्ष की आयु में सन्यास ग्रहण करने के साथ हुई और उन्होंने 12 वर्ष का मौन व्रत लिया। इस अवधि के दौरान, उन्होंने जैन, बौद्ध और वैदिक शास्त्रों का वृहद् अध्ययन किया और भारतीय विद्या भवन से दर्शनाचार्य और बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से नव्य-न्याय और व्याकरण के विषयों में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की।

आचार्य चन्दनाजी का सर्वोपरि उद्देश्य शिक्षा प्रदान करना है क्योंकि उन्हें लगता है कि पीढ़ी के गरीबी के चक्र को तोड़ने का यही एकमात्र तरीका है। "जहाँ भी मंदिर है, वहाँ एक स्कूल

भी होना चाहिए" की घोषणा के साथ, उनका लक्ष्य प्रत्येक तीर्थ स्थल पर अच्छी गुणवत्ता वाले स्कूल बनाना है। पिछले बीस वर्षों में, उन्होंने बिहार, गुजरात, राजस्थान, नेपाल और कई अन्य स्थानों पर अत्याधुनिक शैक्षिक केंद्रों की स्थापना की है। युवाओं को शिक्षित और सक्षम बनाने के उनके लक्ष्य के साथ, ग्रामीण भारत में कई उच्च शिक्षा संस्थान भी स्थापित किए हैं। उनके प्रयासों से अब तक 2,00,000 से अधिक बच्चे और युवा इन शैक्षिक कार्यक्रमों से लाभान्वित हो चुके हैं। बिहार और पालीताना में नेत्र अस्पताल जैसी स्वास्थ्य सुविधाएँ स्थानीय आबादी को उत्कृष्ट चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करती है, जिनमें 35 लाख लोगों का इलाज किया गया है और 350,000 आंखों की सर्जरी की गई है। उन्होंने गहरी करुणा से कच्छ और नेपाल के भूकम्प, बाढ़, सूनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं के बाद और, हाल ही में, कोविड-19 महामारी के दौरान कई आपालकालीन राहत कार्यक्रम संचालित किए हैं।

एक बहुआयामी व्यक्तित्व, आचार्य चन्दनाजी को जैन दर्शन पर एक गहन विचारक और लेखक माना जाता है। वह एक प्रतिभाशाली कलाकार भी हैं जिन्होंने बिहार के राजगीर में एक सुन्दर संग्रहालय बनाया है। उनकी विभिन्न आध्यात्मिक केन्द्रों की स्थापना और नियमित यात्राओं के माध्यम से न केवल भारत में बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हजारों लोगों को प्रेरित किया है और उनका आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया है।

आचार्य चन्दनाजी को मानवता के लिए उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई सम्मानों और प्रशंसापत्रों से सम्मानित किया गया है। इनमें महावीर फाउंडेशन पुरस्कार; श्री देवी अहिल्या राष्ट्रीय पुरस्कार जैन प्रेसिडेंशियल पुरस्कार; आधुनिक भारत के संत और सूर्यदत्त राष्ट्रीय लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार शामिल हैं। उन्हें न्यूयॉर्क राज्य से भी दो सम्मान मिले हैं।

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक का एक इंग्लिश पृष्ठ

Acharya Shri Chandanaji is a vibrant and energetic 85-year-old Jain Sadhvi, who has touched millions of lives worldwide. As the founder and spiritual head of Veerayatan, she leads this international charitable organisation which was established over 50 years ago in the state of Bihar, India. Her mission is to transform lives through Seva (selfless service), Shiksha (education) and Sadhana (spirituality). She was given the prestigious title of Acharya in 1987, the first ever Jain Sadhvi to be bestowed this position in the Jain ascetic community since the time of Bhagwan Mahavir.

Born on 26th January 1937, Acharya Chandanaji's spiritual journey began when she renounced at the age of 14. After renunciation, she committed herself to a 12-year vow of silence. During this period, she extensively studied Jain, Buddhist and Vedic scriptures and obtained many degrees including Darshanacharya from Bhartiya Vidya Bhavan and the title of Shastri in the subjects of Navya-Nyaya and Vyakaran from Banaras Hindu University.

Acharya Chandanaji is paramount aim is to provide education as she feels that this is the only way to break the cycle of generational poverty. With the proclamation "Where there is a temple, there must be a school", she aims to create good quality schools at every pilgrimage site. In the last twenty years, she has established state of the art educational centres in Bihar, Gujarat, Rajasthan, Nepal and many other places. With her goal to educate and empower young people, many higher education institutions have also been established in rural India. Till date over 200,000 children and youth have benefitted through these educational programs. Healthcare initiatives such as eye hospitals in Bihar and Palitana provide excellent

medical services to the local population with 3.5 million people treated and 350,000 eye surgeries undertaken. Her deep compassion has led to the initiation of numerous emergency relief programs in the aftermath of natural calamities such as the Kutch and Nepal earthquakes, floods, tsunami and, most recently, the Covid-19 pandemic.

A multidimensional personality, Acharya Chandanaji is admired as a deep thinker and writer on Jain philosophy. She is also a talented artist who has created a beautiful museum in Rajgir, Bihar. She has inspired and spiritually guided thousands of people not just in India but also internationally through establishment of various spiritual centres and regular travels.

Acharya Chandanaji has been bestowed many honours and accolades over the years for her outstanding contribution to humanity. These include the Mahavir Foundation award; Shri Devi Ahilya National Award; The JAINA Presidential Award; and the Saint of Modern India and Suryadatta National Lifetime Achievement Award. She also received two accolades from the State of New York.

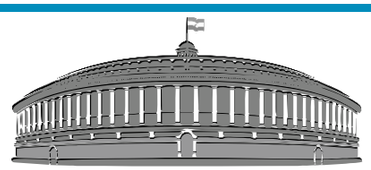

पार्लियामेंट ठहाकों से गूंज उठा

ब्रिटिश संसद में सर विलियम जान्सन हिक्स अभिभाषण दे रहे थे। भाषण देते-देते, उनकी दृष्टि विंस्टन चर्चिल पर गिरी। चर्चिल उनकी बात से असहमत थे अत: वे अपना सिर विरोध को व्यक्त करने के लिए हिला रहे थे।

विलियम ने अपना भाषण पूर्ववत् चालू रखते हुए सभा के अध्यक्ष महोदय को सम्बोधित कर कहा- मैं सभा में बैठे हुए सम्माननीय साथी मिस्टर चर्चिल को देख रहा हूँ। मेरे विचारों को सुनकर विरोध व्यक्त करने हेतु वे अपना सिर हिला रहे हैं। उनसे नम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूँगा कि ये मेरे अपने निजी विचार हैं।

विंस्टन चर्चिल यह सुनते ही अपने स्थान से उठकर खड़े हुए और उन्होंने कहा- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय! मेरे साथी मिस्टर विलियम यह क्यों भूल गये कि मैं भी अपना निजी सिर हिला रहा हूँ।

यह सुनते ही पार्लियामेन्ट का नया भवन गगनभेदी ठहाकों से गूँज उठा। विलियम जान्सन के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकल सका।

शिविर साधकों के भावोद्गार निमंत्रण नंदनवन का

जब निमन्त्रण सह्याद्रि शिखरों पर खिले नन्दन वन का हो और जब पद्मश्री डॉ. चन्दनाश्रीजी पूज्य ताई माँ स्वयं उपस्थित हो तब कोई कैसे निमन्त्रण को नकार सके?

बात है नवल वीरायतन पूणे की जहाँ दिनांक- 16.03.2023 से 18.03.2023 तक त्रिदिवसीय आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न हुआ। स्थान की उच्चता, पावनता और रमणीयता सच में नन्दनवन का चित्र प्रस्तुत करती हो और जहाँ स्वयं आचार्य श्री ताई मां अपने शिष्य संघ के साथ विराजमान हो तब साधक का हर कदम आत्माभिमुख कैसे न उठे? सचमुच अमृत की वर्षा हुई। 65 साधकों ने भाग लिया था। सबके सब मानो अन्दर बाहर भींग-भींग उठे। प्रत्येक साध्वीश्रीजी ने अपने-अपने बेहतरीन अन्दाज में जीवन स्पर्शी अमृत बाटा। शिविर का हर दिन ही नहीं हर पल आनन्द वर्द्धक रहा। हर व्यवस्था साधकों की साधना में वृद्धि लाने में मदद रुप रही।

लाभार्थियों ने अपने उद्गार बड़ी सुन्दरता से एवं विस्तार से प्रस्तुत किये हैं। उसका अत्यन्त संक्षिप्त सार पाठकों हेतु प्रस्तुत है- "जो पाया है शिविर में अनिर्वचनीय है, दिशा मिली है जीवन की। साक्षात् समोशरण में होने का अनुभव पाया।"

उदास और हताश जीवन में **"मुस्कान से मोक्ष"** के ताई मां के दिव्य सूत्र ने उल्लास और आनन्द भर दिया।

मैंने ताई माँ में साक्षात् भगवान महावीर स्वामी के दर्शन किये। पूज्य ताई माँ के विशाल ओरा ने मेरी सारी बिमारियाँ दूर कर दी। सचमुच! पूज्य ताई माँ कल्पवृक्ष है और उनका शिष्य संघ कल्पवृक्ष के अमृत फल।

इस शिविर में मुझे जीवन का सूत्र

मिला– **"रोना संसार है और मुस्कान मोक्ष।"** आत्मा है करुणा और मैत्री का खजाना तथा उसे बांटना है मोक्ष का मार्ग। एक साधक ने इस रत्न को अपना लिया। किसी के हाथ यह सूत्र लगा कि दूसरों के जज मत बनो स्वयं के जज बनो।

एक लाभार्थी के बोल थे– पूज्य ताई माँ! आपने जैन समाज की महिमा बढ़ाई है। आपको 'पद्मश्री' पुरस्कार जो प्राप्त हुआ है वस्तुतः वह जैन समाज को मिला है। किसी ने लिखा शिविर एक प्रकार से जीवन को रीचार्ज करने की प्रक्रिया थी। सबने वहाँ के वातावरण एवं व्यवस्था की खूब तारीफ की।

सभी शिविर लाभार्थियों से क्षमा चाहते हैं कि उनकी अभिव्यक्तियाँ हम संक्षेप में दे रहे हैं। जिन्होंने लिखा है उनके नामों की सूचि इस प्रकार है–

सौ. चन्दनबाला सी. बोरा, सौ. शमा लुणिया, राजश्री वी. पोखरणा, पद्मजा भटेवरा, संगीता खिंवसरा, संगीता बडेरा, कमला खिंवसरा, विजया सुभाषजी देसर्डा, सौ. सविता सूर्यकान्तजी बेद, मिनल खिवसरा, सौ. सरोज रायचन्दजी खिंवसरा, सौ. ज्योति रुपेश बोथरा, सौ. ज्योत्स्ना बोरा, शोभा प्रवीणचन्दजी ओस्तवाल, सौ. सूर्यमाला चंगेडिया, सुजाता मनोज मुथ्था, प्रभा भण्डारी, सौ. हेमलता जयन्तीलाल चोरडिया, सौ. मंगला भटेवरा, सौ. कल्पना सुनीलजी संचेती, कल्पना खिंवसरा, इन्दुमती कंकुलोल, सौ. पुष्पलता वसन्तलालजी लुणावत।

जय जैन की बुद्धि की एकाग्रता को देखकर लोग चमत्कृत थे।

हमने पाया जीवन को देखने का नया दृष्टिकोण

पूणे महाराष्ट्र में भीमा नदी का विशाल प्रवाह, चासकमान डेम और सामने प्रमुख लिंग भीमाशंकर धाम तथा सह्याद्रि की सुदीर्घ फैली पर्वतमाला के एक उच्च शिखर पर स्थित **"नवलवीरायतन"** के पावन परिसर में विराजित है 'पद्मश्री' सम्मान से सम्मानित आचार्य भगवन्त श्री चन्दनाश्रीजी। उनका अमृतोपम सान्निध्य प्राप्त है। उन्हें श्री ताई माँ कहते समय अनुभव होती है विलक्षण अतिविलक्षण उनकी आत्मीयता।

अत्यन्त उत्साह के साथ दिनांक- 16 मार्च की संध्या के पूर्व ही हम यहाँ पहुँचे। सायंकालीन प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ ऐसी अनुभूति हुई मानो प्रभु महावीर के समवसरण में पहुँच गये हो। स्वागत में बरसते पारिजात के पुष्प की तरह पूज्य ताई माँ की मुस्कान ने हमें साधना का रहस्यसूत्र दे दिया- "मुस्कान से मोक्ष"।

माँ की गोद से भी अधिक ममतापूर्ण था श्रद्धेय ताई माँ का सान्निध्य एवं उनका दिव्य स्पर्श, जिसने हमें प्रातःकालीन ध्यान में परमात्मभाव की, एकरुपता की अनुभूति करायी।

योग प्रशिक्षण, अल्पाहार, और जीवन की आवश्यक क्रिया सम्पन्न हुई। मैं सदा सोचती रहती थी कि मेरा भी अस्तित्व है, मुझे भी सब के जैसा सुख प्रिय है, मुझे भी मान-सम्मान चाहिए। मैं क्यों हर समय कर्त्तव्यपूर्ति के बोझ तले दबी रहती हूँ? क्या जीवन भर ऐसा ही भार ढोती रहूँगी? लेकिन श्री ताई माँ के उद्बोधन ने सारा भार उतार दिया।

परिवार, सहयोगी, साथी, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और प्रकृति के साथ भी मुझे अनुभव हुआ कि मेरा रिश्ता प्रेमपूर्ण हुआ। निर्भार हुआ। जीवन शैली, जीवन की ओर देखने की दृष्टि सबकुछ बदल गया। श्री ताई माँ के अमोघ आशीर्वाद से जीवन पावन हुआ। जीवन को देखने का दृष्टिकोण बदल गया।

श्री ताई माँ का शिष्यसंघ पूज्य साध्वी मण्डल ने हमें पूरा समय दिया। उनके चरणों में श्रद्धापूर्वक वन्दन अर्पण करते हैं। योग शिक्षक

तथा विशेष रूप से बिना मेडिसीन के स्वास्थ्य लाभ के गुर सिखाए हैं श्री हेमन्त एवं डॉ. आरती ने हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं। और हृदय की गहराई से हम आभारी है आदरणीय 'बाबा' श्री नवलमलजी फिरोदिया एवं उनके सुयोग्य सुपुत्र डॉ. श्री अभयजी फिरोदिया के। जिन्होंने अत्यन्त दक्षता के साथ वीरायतन के अध्यक्ष पद से वीरायतन की बागडोर संभाली है। वीरायतन की ख्याति सर्वविदित है।

समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा कि उन्होंने आध्यात्मिक एवं शैक्षणिक जगत् में जनचेतना की जागृति के लिए तथा मानवीय जीवन मूल्यों की वृद्धि की दिशा में सुयोग्य मार्गदर्शन करने के लिए 'नवल वीरायतन' का निर्माण किया।

हमें हमारे प्रति विश्वास है कि नवलवीरायतन में जब भी ऐसा अवसर मिलेगा हम उसका लाभ अवश्य लेने का पूरा-पूरा प्रयास करेंगे। और अनन्त उपकारी श्री ताई माँ के चरणों में अपने निष्ठापूर्ण समर्पण की पुष्पांजलि अर्पित करके जीवन की धन्यता का अनुभव करते रहेंगे।

डॉ. श्री अभयजी फिरोदिया को कैसे हम धन्यवाद दे बड़ा छोटा लगता है शब्द जो सुन्दरतम श्रेष्ठतम व्यवस्था उन्होंने भोजन की, आवास की, प्रवास की सारा अत्यन्त सुन्दर आयोजन किया है, हम बस, धन्य-धन्य करते हैं।

– सौ. सज्जन बोथरा

नवलवीरायतन में श्री अभयजी फिरोदिया- अध्यक्ष वीरायतन के सौजन्य से संपादित दिनांक- 14 से 16 अप्रैल के त्रिदिवसीय द्वितीय आध्यात्मिक शिविर के लाभार्थियों के उद्‌गार- श्रद्धेय ताई मां का देदीप्यमान, मुखमण्डल मानो उनके अनगिनत दीप्तीमान कार्यों की दीप्ति द्योतित करता है।

अभूतपूर्व रहा यह शिविर। बाह्याभ्यन्तर शुद्धि के साथ आत्मविशुद्धि का सफल प्रयास रहा। अहिंसा, करुणा, अनेकान्त का संबल लेकर सफल जीवन जीने की प्रेरणा रही। नहीं भूल पायेंगे श्रद्धेय ताई मां का प्यार और आशीर्वाद तथा विदुषी पूज्य यशाजी महाराज एवं शिलापीजी महाराज के सदा ऋणी रहेंगे। **–प्रतीक्षा गांधी अहमदनगर**

धार्मिक एवं आध्यात्मिक साधना में रूढ़परम्परागत फैली भ्रान्तियों का निवारण करके समाज को नयी सोच, नयी दिशा प्राप्त हो सके तथा आत्ममंगल के साथ जनमंगल के लिए वीरायतन के संपादित कार्य वस्तुतः प्रेरणादायक है। इसमें नवल वीरायतन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हम सब शिविर साधकों की ओर से श्री अभय फिरोदियाजी का हार्दिक अभिनन्दन।

–कल्पना बरमेचा एवं घोडनदी की बहनें

पद्मश्री आचार्य चन्दनाश्रीजी श्रद्धेय ताई माँ वह त्रिवेणी संगम तीर्थ स्वरूपा हैं जहाँ सेवा, शिक्षा और साधना की पावन धाराएँ बहती है। उनके द्वारा संस्थापित वीरायतन तीर्थ मात्र संस्थान नहीं है किन्तु समोशरण है 25 वीरायतन मानो देवों द्वारा निर्मित साक्षात् तीर्थंकरों के समोशरण हो। ताई माँ का व्यक्तित्व एक ऐसा विराट व्यक्तित्व है कि जहाँ किसी प्रकार के भेदभावों की संकीर्णता टिक नहीं पाती। हर व्यक्ति में वे गुणों को देख लेती है और तद्‌नुसार दिव्य कार्यों से उसे जोड़ देती है। लाखों जिन्दगियों को उन्होंने छुआ और उन्हें प्रकाश से भर दिया है।

उन्होंने शून्य में से सर्जन किया है, अंधेरे में प्रकाश फैलाया है। दूर-दूर तक प्रभु महावीर की अहिंसा को पहुँचाया है।

धन्य है पूज्य ताई माँ! आपने पूज्य बाई

महाराज के नाम को रोशन किया है। और वस्तुतः धर्म प्रभावना की एक मिसाल प्रस्तुत की है।

–पद्मा बाठिया, पूणे

जब से मैं जैन धर्म, जैन समाज और जैन रीति रिवाज को समझने लगी हूँ तब से श्रद्धेय ताई माँ के क्रान्तिकारी कार्यों के विषय में भी सुनती रही हूँ और मेरे मन में उत्सुकता के साथ ताई मां के प्रति धन्यभाव बढ़ता रहा है। सच! वह एक कटारिया परिवार का ही हीरा नहीं बल्कि प्रभु महावीर के शासन का हीरा है। एक स्त्री होकर जो उन्होंने जैन शासन की कीर्ति पताका देश-विदेश में दूर-दूर तक फहराई है, जो लाखों लोगों की अंधी आंखों को रोशन किया है और लाखों विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षा का प्रकाश फैलाया है वह अद्वितीय है। अपूर्व है उनका वीरायतन।

यथार्थतः वे चन्दन है। खुद घिसते रहे और सुगन्ध बिखेरते रहे और धन्य है यह नवल वीरायतन। जहाँ जिज्ञासु साधकों को अपूर्व लाभ प्राप्त हो रहा है।

–श्री शैलजा दिलीप कटारिया, चाकण पुणे

मेरा अतिशय सौभाग्य है कि नवल वीरायतन जैसी स्वर्गिक पुण्यभूमि में और आचार्य चन्दनाश्रीजी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय शिविर में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पूज्य श्री यशाजी महाराज साध्वीश्री विभाजी एवं साध्वीश्री शिलापीजी ने इतने स्वल्प समय में जो अपार जीवन दृष्टि दी है सचमुच जीवन बदल दिया है। मैंने जाना पूज्य ताई माँ के जीवन का अर्थ है– selfless work, unconditional love, unstoppable creativity and extreme Vision और प्यार तथा आशीर्वाद से भरा हृदय। जो मैंने यहाँ आनन्द, ज्ञान और जीवन दृष्टि पायी है, मैं शब्दों में कह नहीं पा रही हूँ।

और श्री अभयजी फिरोदिया परिवार के प्रति कृतज्ञता अर्पित है कि उन्होंने इतना सुन्दर नवल वीरायतन बनाकर हमें श्रद्धेय ताई माँ के चरणों में आने का अवसर दिया।

–सौ. योगिता अभय फुलपगर घोडनदी पूणे

प्रतिमा में परमात्मा

जो मृतक को देखकर अपनी मृत्यु को देख सके,
जो वृद्ध को देखकर अपना वृद्धत्व देख सके,
वही प्रभु की प्रतिमा में परमात्मा के दर्शन कर सकता है।

उद्घाटन डायग्नोस्टिक सेंटर का

परम श्रद्धेय 'पद्मश्री' डॉ. आचार्य चन्दनाश्रीजी पूज्य ताई माँ अभी नवल वीरायतन पूणे में सुखसाता पूर्वक विराजमान है और उनके सान्निध्य में तारीख- 18.03.2023 से 21.03.2023 तक एक आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें महाराष्ट्र के अनेक स्थानों से आकर साधकों ने सुलाभ लिया। तथा पुनः पुनः ऐसे शिबिरों की भावना रखी।

शिविर के पहले आचार्यश्री ताई माँ की आज्ञा से उपाध्याय साध्वीश्री यशाजी एवं साध्वीश्री संघमित्राजी वलसाड वापी के धरमपुर पधारे, जहाँ पूज्य ताई माँ की प्रेरणा और आशीर्वाद से दानवीर श्री डॉ. सी. जे. देसाई ने 16 करोड़ की लागत से डे-केयर तथा डायग्नोस्टिक सेन्टर का विशाल निर्माण किया है। दिनांक- 11.03.2023 को अनेक गण्यमान्य महान हस्तियों एवं जनसमूह के जमावड़े की उपस्थिति में पूज्य श्री धीरज मुनि की पावन निश्रा में उनके द्वारा 'आरुग्गबोहिलाभं' के घोष के साथ अत्यन्त हर्षोल्लास से उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में साध्वीश्री संघमित्राजी के सुमधुर मंगलाचरण के साथ उपाध्याय श्री यशाजी ने हृदयग्राही उद्बोधन दिया। और सोने में सुहागा एवं दूध में केशर की तरह एक कड़ी और जुड़ गयी कि राजकोट में ढ़ेबरभाई रोड़पर छगनलाल शामजी विराणी ट्रस्ट की गूंगे-बहरे की शाला में इन्डोर स्पोर्टस् नामकरण में 31 लाख का अनुदान चि. क्रीश प्रणय देसाई ने ज्योत्सनाबेन चन्द्रवदनभाई देसाई, कलकत्ता के हाथों से समर्पित किया।

वीरायतन राजगृह में समर कैम्प

श्री हंसराज लक्ष्मीचन्द कमाणी जैन भवन भवानीपुर द्वारा संचालित श्री चन्दना स्वाध्याय मंदिर के विद्यार्थी व दीदी लोग (अध्यापिकाओं) के लिए राजगीर में डॉ. साध्वी सम्प्रज्ञाजी के सानिध्य में समरकैम्प का त्रिदिवसीय आयोजन सम्पन्न हुआ।

हम 30 विद्यार्थी एवं 13 दीदी दिनांक- 13.04.2023 शाम को कलकत्ता से निकलकर 14.04.2023 की सुबह वीरायतन पहुंचे। श्रद्धेय ताई मां एवं वीरायतन ये दोनों शब्द हर विद्यार्थी के रग-रग में रमे हुए मानो हर दिल को प्रकाश से पूरित करते हैं। हरेक के मन में वीरायतन की उत्सुकता वीरायतन दर्शन के लिए उसे आन्दोलित करती रहती है। हर विद्यार्थी एक्साइटेड था कि कब वीरायतन पहुँचे।

पहुँचने के साथ सबका केसर-चंदन के तिलक एवं आरती से स्वागत हुआ। और डॉ. साध्वी सम्प्रज्ञाजी ने एक छोटा-सा मीठा-सा संदेश दिया- "यद्यपि गर्मी भरपूर है लेकिन गर्मी से परेशान होने में आपना यह अनमोल समय मत खोना। किन्तु पग-पग पर इस भूमि की पावनता को महसूस करना। इस प्रभु की समोशरण भूमि में उनके पवित्र परमाणुओं के वाइब्रेशन को फील करना। एवं पूज्य पद्मश्री आचार्य चन्दनाश्रीजी श्रद्धेय ताई माँ द्वारा संस्थापित इस

संस्थान की गरिमा का अनुभव करना। साध्वीजी के उद्बोधन से प्रेरित सबका उत्साह द्विगुणित हुआ।

सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार अल्पाहार के बाद ग्लासब्रीज, जू-सफारी करके दोपहर के भोजन के बाद सबने साइडसीन का आनन्द लिया।

राजगीर में सबकुछ देखा किन्तु पूज्य ताई माँ के कलात्मक हाथों से एवं उनकी प्रज्ञा-प्रतिभा से निर्मित म्यूजियम "श्री ब्राह्मी कला मंदिरम्" देखने की उत्कर अभिलाषा को न गर्मी रोक सकी न थकान। संध्याबेला में हम सबने म्यूजियम देखने के लिए भीतर प्रवेश किया, एक-एक दृश्य अद्भुत और अलौकिक रीति से हमें आल्हादित करता रहा। न आंखें झपक रही थी न पैर म्यूजियम से बाहर निकलना चाहते थे। सचमुच ताई मां एक दिव्य शक्ति है। और दिव्य है उनका वीरायतन।

दूसरे दिन साध्वीश्री रोहिणीजी ने हमें पूरे वीरायतन की परिक्रमा करवाई। हर प्रवृत्ति लोकहितकारी, हर कार्य जीव रक्षा का करुणा एवं प्रेम का, अहिंसा के विविध आयामें से भरपूर। पावापुरी के स्कूल परिसर को देखकर मानो ऐसा लगा कि हम वही पर अपना एज्युकेशन ले। वहाँ के शिक्षक लोगों का तथा विद्यार्थियों का संस्कारपूर्ण व्यवहार हम कभी भूल नहीं सकेंगे।

और हर शाम वीरायतन के जिनालय में सांध्यभक्ति के साथ प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हमारे जीवन में प्रकाश देते रहेंगे।

हम बड़े होकर वीरायतन के कार्य को आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील रहेंगे। ऐसा संकल्प हमारे भीतर से जगा है जिसे हम जागृत रखेंगे।

तीनों ही दिन की सान्ध्यभक्ति का एक अलौकिक आनन्द हम कभी भूल नहीं सकेंगे। वीरायतन की विविध प्रवृत्तियों से एक विलक्षण है। पूज्य ताई मां की प्रज्ञा और प्रतिभा का रिफ्लेक्शन हर जगह दिख रहा था। नेत्र ज्योति सेवा का मूर्त रुप साक्षात दिखाई दिया, जो जन-जन तक पहुँच रहा है। व्यक्ति अभिभूत था। पूज्य ताई मां की प्रज्ञा और कला सचमुच अनिर्वचनीय है। हम ही नहीं वहाँ आते हर दर्शक के मुहँ से हमने सुना अद्भुत! अत्यन्त अद्भुत!! हम सबके भावोद्गार थे- ये है पावन भूमि, यहाँ बार-बार आना।

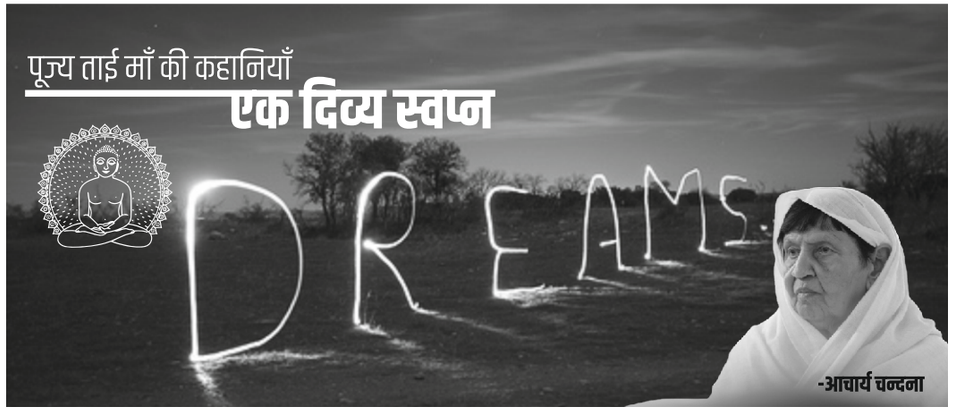

स्वप्न का संसार बड़ा ही विलक्षण है। जो चिन्तन हमारे चित्त में, पल-प्रतिपल चलता रहता है, वह निश्चित रुप से हमारे स्वप्नों को प्रभावित करता है।

यही बात है कि एक रात मैंने एक अद्भुत स्वप्न देखा- वह स्वप्न ऐसा था कि एक सुन्दर बड़े सिंहासन पर साक्षात् स्वयं भगवत् मूर्ति विराजमान थी और उनके चारों ओर धन-दौलत का अम्बार लगा हुआ था जिसे भगवान दोनों हाथों से आशीर्वाद के साथ बांट रहे थे। जो मांगे, जितना मांगे भगवान देते जा रहे थे। सामने देखा तो दूर-दूर तक लोग ही लोग नजर आ रहे थे।

मैंने सोचा देखु तो सही कि इस भीड़ में कोई पहचान वाला चेहरा भी है या नहीं। देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ मुझे कि ऐसे चेहरे भी थे उनमें जिन्हें समाचार पत्रों में कई बार देखा जाता है। बड़े प्रसिद्ध चेहरें, वे भी बड़ी-बड़ी झोलियाँ लेकर आये थे।

जब मैंने भगवान की ओर देखा तो मुझे सिंहासन के पार्श्व में थोड़ा पीछे की ओर एक व्यक्ति करबद्ध विनम्र मुद्रा में खड़ा दिखाई दिया। मुझे जिज्ञासा जगी, अत: उस ओर आगे बढ़कर अपनी जिज्ञासा व्यक्त की कि कौन है वह और इस तरह पीछे क्यों खड़ा है? उस व्यक्ति ने किंचित् घुमकर मेरी ओर देखा और पुन: यथावत विनित मुद्रा में खड़ा हो गया।

मैंने सोचा शायद मेरी बात उसके कानों तक न पहुँची हो अत: और नजदीक जाकर मैंने कहा- "मेरे भाई! जरा मेरी बात सुनो। देखो, सामने लोगों की लाईन अन्तहीन है। आपका नम्बर आये तब तक पता नहीं कुछ बचेगा कि नहीं। अत: जाओ और अपने लिए मांग लो कुछ।"

मेरी बात सुनकर भी उस व्यक्ति की दृढ़ता में कोई अन्तर नहीं आया तब और आगे बढ़कर मैंने ठीक से देखा कि वह है कौन?

देखकर मैं चकित और अवाक् रह गयी। वे तो स्वयं गणधर गौतम थे। स्मितवदन वे मेरी ओर देखकर बोले, "अज्ज चन्दना! मैं यहाँ मांगने नहीं, प्रभु के आदेश की प्रतीक्षा में खड़ा हूँ।" सुनकर मैं विभोर हो गयी! और जाकर मैं भी उनके पीछे खड़ी हो गई कि मुझे भी कोई आदेश मिल जाय, जिसका मैं पालन कर सकुं।

कुछ क्षणों की अन्तर्लीन भावस्थिति में मेरे भीतर मानों प्रभु का आदेश अनुगूंजित हुआ, "मुझे मन्दिरों में बन्द मत करो। किन्तु सम्पूर्ण जीव जगत् का जो विश्व मंदिर है उसकी अखण्डता बनाये रखो। उसे खण्डित मत करो।" अर्थात् प्रभु महावीर का सूत्र "एगे आया" प्रत्येक आत्मा तुम्हारी तरह ही सुख-दु:ख का अनुभव करती है। इस जगत के छोटे-से-छोटे प्राणी को भी कष्ट मत पहुँचाओ। बल्कि उनके कष्ट को अपना कष्ट समझो। **"आयतुले पयासु"** सभी जीवों को आत्मतुल्य समझो। उनके कष्ट को दूर करने का प्रयास करो।

प्रभु के आदेश को सुना और मैं जाग उठी तथा प्रभु के आदेश को मैंने अपने संकल्प में जोड़ लिया। अपनी भावना में बसा लिया और प्रभु के इस संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रही हूँ।

जब-जब मैं प्रार्थना करती हूँ और जब-जब भगवान से मांगने का प्रसंग आता है तब-तब यह स्वप्न मुझे जागृत कर देता है। और मैं कृतज्ञता के भावों से भर जाती हूँ और खड़ी हो जाती हूँ। स्वप्न को हकीकत में उतारने के लिए ।

प्लांट बेस्ड वेलनेस फाउंडेशन

अमेरिका द्वारा वीरायतन में सेमिनार का आयोजन

प्लांट बेस्ड वेलनेस फाउंडेशन के फाउंडर श्री ललित मोहन कपूर द्वारा विगत शनिवार को वीरायतन में एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें पेड़-पौधों पर आधारित भोजन के द्वारा डायविटीज, ब्लड प्रेसर, कैंसर, गठिया, थाईराइड, अल्सर इत्यादि कई बिमारियों से बिना दवा के कैसे निजात पाई जा सकती है या होने से रोका जा सकता है इस पर चर्चा की गई।

इस सेमिनार का उद्घाटन आचार्यश्री चन्दानाश्रीजी की प्रेरणा व आशीर्वाद से ललित मोहन कपूर, डॉ. साध्वीश्री सम्प्रज्ञाजी, साध्वीश्री रोहिणी जी, वीरायतन के संयुक्त सचिव श्री सुनील जैन एवं गीता जैन के द्वारा सामूहिक रूप से दीप प्रज्वलन कर किया गया। डॉ. साध्वी सम्प्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि विगत वर्षों में जब कोरोना महामारी फैली हुई थी तब सभी लोग जैन परम्परा के अनुसार अपनी दिनचर्या करने लगे थे जैसे उबला पानी पीना, संध्या भोजन करना,

उपवास रखना, जड़ी-बूटियों का काढ़ा पीना इत्यादि। आज वैज्ञानिक तौर पर यह साबित भी हो चुका है। जिसे ही अमेरिका से आये ललित मोहन कपूर जो वहाँ के भोजन एवं दैनिक जीवन चर्या के कोच भी हैं, इस बारे में आपको विस्तार से बताएँगे।

ललित मोहन कपूर ने अपने व्याख्या में बताया कि जीवन में स्वस्थ रहने के लिए निम्नलिखित बातों पर अमल करना बेहद जरूरी है। प्रत्येक दिन अंतरिम उपवास (कम से कम 14 घंटे का), महीने के दोनों एकादशी को दीर्घ उपवास (कम से कम 36 घंटें का), पशु आधारित भोजन का त्याग (जैसे दूध, दही, पनीर, मांस इत्यादि), भोजन के 15 मिनट पहले एक ग्लास कच्ची साग-सब्जी या फलों का जूस, साबुत आनाज का भोजन में अधिक प्रयोग एवं रिफाइंड तेल का ना के बराबर प्रयोग। उपरोक्त सभी बातों पर उनके द्वारा स्लाइड के माध्यम से विभिन्न प्रयोग एवं वैज्ञानिक शोध एवं डाटा के माध्यम से विस्तार से बताया गया। उन्होंने बताया आज विश्व के 45 देशों के लगभग दस लाख लोग अबतक अपने बिमारियों को ख़त्म कर चुके हैं और स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। साथ ही लाखों लोग उनके व्हाटसप ग्रुप से जुड़कर दिए गये निर्देशों का पालन करके अपने रोगों का उपचार घर बैठे कर रहे हैं।

वीरायतन के प्रबंधक श्री अंजनी कुमार ने बताया कि चुकिं वीरायतन सेमिनार हॉल की क्षमता 100 लोगों की ही थी इसलिए पूरे जिले से बहुत ही कम लोगों को आमंत्रित कर पायें। जो भी लोग इस सेमिनार में उपस्थित हुए वे बहुत प्रभावित हुए और अपने जीवनचर्या को बदलने का प्रण लिया। सेमिनार के बाद सभी लोगों के लिए वीरायतन में ही भोजन में प्लांट बेस्ड फूड खाने में परोसा गया जिसमें की चीनी, तेल, मैदा इत्यादि शामिल नहीं थे। श्री कुमार ने आगे बताया कि जिस प्रकार से लोगों का रुझान मिला है उसको देखते हुए ऐसा लगता है कि निकट भविष्य में श्री ललित मोहन कपूर जी का एक बड़ा सेमिनार करवाना होगा। उन्होंने आगे बताया कि श्री ललित मोहन कपूर सन 1971 में IIT कानपुर के हैं और सिलिकॉन वैली, अमेरिका के बड़े उधमी रह चुके हैं। पर इन सबो को छोड़कर धीरे-धीरे उन्होंने लोगों के खान-पान और दैनिक जीवनचर्या में सुधार लाने की कोशिश शुरू की और आज वह इस कार्य में पूर्ण सफल हैं। इस अवसर पर पटना, बिहार शरीफ, नवादा, गया एवं राजगीर के लोग उपस्थित हुए।

तीर्थंकर महावीर विद्या मंदिर पावापुरी में
नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर संपन्न

'पद्मश्री' डॉ. आचार्य चन्दनाश्रीजी पूज्य ताई मां द्वारा संस्थापित वीरायतन संस्थान विगत 50 वर्षों से सेवा, शिक्षा और साधना के विविध आयामी आयोजन निरन्तर-निरन्तर जन-जन के हितार्थ करता आ रहा है। और अनेकानेक सत्भक्तों के प्रयास से प्रगति करता जा रहा है।

वीरायतन के अध्यक्ष डॉ. श्री अभयजी फिरोदिया अपने पिता की ही तरह सम्पूर्ण श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से वीरायतन की प्रगति में सहयोग दे रहे हैं। उनके द्वारा प्रदत्त सम्पूर्ण डॉक्टरी सुविधाओं से सम्पन्न दो मोबाइल वाहनों से वीरायतन दूर-सुदूर के ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचकर सेवाएँ प्रदान कर रहा है। इसी क्रम में दिनांक- 05.05.2023 को तीर्थंकर महावीर विद्या मंदिर वीरायतन पावापुरी में 375 लोगों के आंखों की जांच की गई।

शिविर की शुरुआत में वीरायतन चेअर पर्सन डॉ. साध्वी सम्प्रज्ञाजी ने कहा, 'नेत्र हमारे शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगों में से एक प्रधान अंग है। इसकी देखभाल अत्यन्त आवश्यक है।'

प्राचार्य कौशल किशोर कौशिक ने बताया कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों एवं शिक्षकों के नेत्र विशेष रुप से प्रभावित हुए हैं अत: उनकी नेत्र जांच अत्यंत जरुरी थी। इस शिविर आयोजन के लिए उन्होंने 'पद्मश्री' आचार्य चन्दनाश्रीजी को, डॉ. साध्वीश्री सम्प्रज्ञाजी को, डॉ. अभय फिरोदियाजी को एवं पूरे वीरायतन परिवार को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कड़वी औषधि

एक डॉक्टर थे जो हमेशा खुश रहते थे। एकबार उनके मित्र ने उनसे पूछा कि तुम हर परिस्थिति में इतने खुश कैसे रहते हो? डॉक्टर ने उत्तर दिया मैं दवा से जिंदगी जीना सिखा हूँ। मित्र ने पूछा मतलब, डॉक्टर ने कहा कि हमारे मुंह में चॉकलेट होता है तो हम देर तक उसे मुंह में चलाते रहते हैं और दवा की गोली होती है तो जल्दी से गले से नीचे उतार देते हैं।
बस! यही मैंने सिखा है। खराब घटना हो तो जल्दी से उसे गले से नीचे उतार देना और अच्छी घटना हो तो उसका खूब आनन्द लेना। इसलिए मैं खुश रहता हूँ।

स्मृतिपुष्प

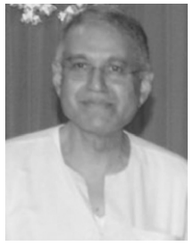

वीरायतन परिवार के अत्यन्त आत्मीय श्री किशोर भाई शाह ने लन्दन में 25 फरवरी 2023 को इस संसार से विदा ली। यह दिन था उनकी पत्नी ज्योतिबेन के निधन से ठीक बीस महीने का।

श्री किशोरभाई का जन्म नैरोबी केन्या में हुआ था और ज्योतिबेन से शादी के बाद वे 1974 में लन्दन आ गये थे। दोनों ने ओसवाल समाज और जैन समुदाय के लिए बहुत योगदान दिया। और वीरायतन के साथ जुड़े जब आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी पूज्य ताई माँ अपने शिष्य संघ के साथ 1995 में लन्दन पधारे। किशोर भाई ने उनके व्याख्यानों में भाग लिया और पूज्य ताई माँ की जैन दर्शन की स्पष्ट व्याख्या तथा सार्वभौमिक मित्रता के संदेश से पूर्णत: प्रभावित हुए। वे वीरायतन यू.के. के ट्रस्टी बने और वीरायतन की अनेक परियोजनाओं में भागीदार बने।

विशेष रूप से 'श्री चन्दना विद्यापीठ' (जैन स्कूल) चलाने में उन्होंने बड़ी भूमिका निभाई। चन्दना विद्यापीठ का प्रत्येक बालक तथा वयस्क विद्यार्थी श्री किशोर भाई को हृदयपूर्वक याद करता है। वस्तुत: वे एक प्रेरणादायक प्रकाश स्तम्भ थे। उनका सकारात्मक दृष्टिकोण अन्तिम क्षण तक यथावत रहा और वे शांति से इस दुनिया से खुद को अलग करने में सक्षम हुए।

उनकी तीनों बेटियों का परिवार ही नहीं सारे श्री चन्दना विद्यापीठ के विद्यार्थी तथा जैन समाज उनके पवित्र सद्गुणों की सुगन्ध को चिरस्मरणीय रखेंगे। **–यू.के. जैन समाज**

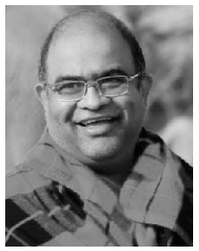

दिनांक- 28.02.2023 को श्री राजनभाई ने इस संसार से विदा ली। यह एक अप्रिय अनचाही सच्चाई है, जिसके आगे सब अवश है। श्री राजनभाई ने पूरा जीवन आनन्द बांटते हुए आनन्दपूर्वक जिया है। उनका इस तरह से चले जाना निश्चित रुप से परिवार की बहुत बड़ी क्षति है, परन्तु जैन समाज की भी अपूरणीय क्षति है।

श्री चन्दना विद्यापीठ के विद्यार्थियों के लिए बड़ा कठिन है श्री राजनभाई को भुला पाना। उन्होंने जैन समाज को अपनी अनुपम सेवाएं प्रदान की है।

श्री चन्दना विद्यापीठ, वीरायतन परिवार और पूरा जैन समाज कृतज्ञता के भावों से उनकी अभिनन्दनीय सेवाओं को अपनी स्मृतिकोष में संजोए रखेगा।

मनीषाबेन, सचिन और रुही एवं पूरे परिवार के साथ वीरायतन परिवार खड़ा है। सहसंवेदना में साथ है।

शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि श्री राजनभाई को ऊर्ध्वगति में सहयोग दे।

–जैन समाज

आत्मप्रिय श्री भन्साली परिवार!

सस्नेह धर्मस्वस्ति,

जीवन के विशिष्ट प्रसंगों की जब स्मृति जाग जाती है तब अन्तर्हृदय की भावनाओं में कुछ हस्तियाँ उभर आती हैं। श्री रिखबदासजी भन्साली एक ऐसी ही विरल हस्ती थी जो चिन्तन के प्रकाश में और अन्तर्हृदय की गहराई में सुस्थित रही है। संयुक्त परिवार का प्रत्येक व्यक्ति ही नहीं, संघ, समाज एवं वीरायतन का प्रत्येक व्यक्ति उनकी सत्कर्म के प्रति सत्यनिष्ठा एवं गुरुचरणों में प्रगाढ़ आत्मीयता से अभिभूत है। बंगाल, बिहार, राजस्थान के अनेकों साधारण परिवार उनके करुणापूर्ण सहयोग के लिए कृतज्ञता का भाव रखते हैं। उनकी खुबी थी कि वे सदैव अविचल रहते थे। चाहे जैसी विवादपूर्ण स्थिति हो वे पीठबल बनकर रहे। तापभरी राहों में उनका प्रेमपूर्ण छत्र बराबर बना रहा। न वे कभी विचलित हुए और न होने दिया।

मुझे स्मरण है सन् 1971 एवं 1972 के कलकत्ता वर्षावास में उन्होंने परम्परा, सम्प्रदाय, जाति एवं समाजगत भेदभावों से ऊपर उठकर पूरे समाज को संगठित करके सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया था। कलकत्ता में शिक्षा एवं सेवा के क्षेत्र में संचालित प्रवृत्तियों में वे सदैव अग्रस्थान पर रहे और उन सत्प्रवृत्तियों में मुझे भी सम्मिलित करते रहे। सबके साथ उनके प्रेमपूर्ण सम्बन्ध, उनकी कुशल कार्यपद्धति एवं यशस्वी कार्यसम्पन्नता तथा अतुलनीय पुरुषार्थ सबकुछ अत्यन्त विलक्षण एवं सराहणीय है।

उनके द्वारा आयोजित सुक्यासलेन कलकत्ता स्थित स्कूल में हमारी पर्युषण पर्व आराधना, क्षमावणी पर्व तथा 300 बच्चों का एक माह की अवधि का शिबिर आज भी सबके जीवन की मधुर स्मृति का रुप लिए हुए है।

सन् 1971 से प्रारम्भ हुई उनकी श्रद्धापूर्ण सबल सहयोग की धारा 53 वर्ष से वीरायतन

की मेरी धर्मयात्रा में साथ-साथ प्रवाहित होती रही। सतत गतिशील रही। कभी अवरोधात्मक स्थिति उत्पन्न नहीं हुई। साध्वीसंघ तथा वीरायतन परिवार के लिए यह सब बहुत खुदप्रद रहा।

मै जानती हूँ, परिवार के लिए उनका वियोग अत्यन्त दु:खद है। खैर, उनकी प्रेरक मीठी यादें इस समय बहुत बड़ा आधार है। सद्गुणों की, शुभसंस्कारों की और सत्कर्मों की भावना जो उन्होंने परिवार के हर सदस्य में जगाई है, मेरा विश्वास है कि सब उस भावाना को जागृत रखेंगे। परस्पर में प्रेम, आत्मीयता एवं सामंजस्य बनाये रखेंगे। उनकी भावना के अनुरुप उनके पथ का अनुसरण करते हुए परिवार एवं समाज के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य करके उनके सम्मानीय स्थान की गरिमा बढ़ायेंगे।

सबके साथ वीरायतन की यात्रा अवश्य करोगे। जहाँ श्री भन्साली जी के श्रद्धापूर्ण कार्यों की सुगन्ध और श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज के आशीर्वाद प्राप्त करोगे।

आशीर्वाद के साथ!

–आचार्य चन्दना

चिंचवड, पूणे निवासी श्रीमती श्रीकुंवर बसन्तीलाल जैन ने 18 मार्च 2023 को संथारा व्रत की आराधना करते हुए समत्वभाव पूर्वक परलोक गमन किया। वे अत्यन्त सरल प्रकृति तथा धार्मिक स्वभाव की साधिका थी। बचपन से ही अपने माता-पिता की तरह गुरुमां श्री सुमती कुंवरजी महाराज तथा 'पद्मश्री' आचार्य चन्दनाश्रीजी के प्रति सर्वात्मना समर्पित श्राविका बनी रही और वीरातयन संस्थान में तन-मन-धन से सहयोगी रही। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में जीवन भर अपना योगदान दिया। जैन विद्या प्रसारक मण्डल चिंचवड में अध्यापिका से प्राचार्य तक के पदों पर रहकर 35 वर्षों तक कार्य किया।

दोनों सुपुत्र किशोरजी एवं जीतूजी तथा दोनों पुत्रवधू विद्याजी एवं अर्पणाजी और पौत्रों तथा पोत्रियों तब सबको मैत्री, करुणा, दान, दया आदि सद्गुणों के संस्कारों से संस्कारित किया है।

शासनदेव से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा की यात्रा प्रकाश की दिशा में होती रहे।

–किशोर- जीतू एवं परिवार

नासिक, महाराष्ट्र में पद्मश्री डॉ. आचार्य चन्दनाश्रीजी,
डॉ. भारती प्रवीण पवार एवं श्री अशोकजी कटारिया चेयरमेन बिल्डकॉन लि. द्वारा
कैंसर सेंटर ऑफ अमेरिका का उद्घाटन।